facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 23 मार्च 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 36 ● मूल्यः 5 रुपए

हरियाली के दावों की सच्चाई

सद्गुरु वाणी

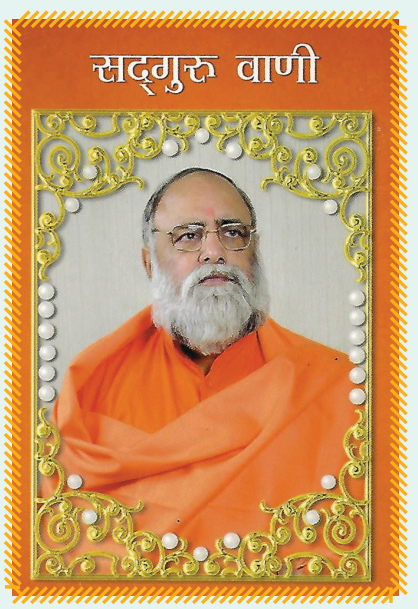

कागज को सीने ला मैने आज समेटा पैमाना। ढूंढ-ढूंढ शब्दों की मदिरा सेवन करता दीवाना। शुद्ध-अशुद्ध कलुषित भाषा ही साकी है मदिरालय की, विश्व समर्पित करता तुमको काव्य रचना।

●

चिरंजीव हो मादक मदिरा जिसमें छलके पैमाना। चिरंजीव हो प्रेरक जिसने मुझे बनाया दिवाना। चिरंजीव हो साकी मेरा मुझ को मय देने वाला, चिरंजीव हो पीने वाला चिरंजीव हो।

कृपा वचन

इंसानियत आवाज नहीं करती बस जरूरत के वक़्त चुप-चाप साथ खड़ी मिलती है।

●

शिक्षा कमाने का जरिया ही नहीं, सोचने का नजरिया भी देती है।

●

कोई हमारी निंदा करे या प्रशंसा करे दोनों ही हमारे लिये अच्छे हैं, क्यूंकि प्रशंसा प्रेरणा देती है और निंदा सावधान होने का अवसर।

ईरान-जंग का 25वां दिन

हमलों, मतभेदों और बढ़ते खतरे के बीच सुलह की राह अब भी धुंधली

अमेरिका-इजराइल के हमले जारी, ईरान का जवाब तेज, वैश्विक राजनीति में बढ़ी बेचैनी

- 15 दिन की जंग ने साफ कर दिया- यह सिर्फ क्षेत्रीय टकराव नहीं, वैश्विक शक्ति संतुलन की लड़ाई है।
- डिमोना पर हमला बता गया कि सबसे मजबूत सुरक्षा कवच भी अब अटूट नहीं रहे।
- युद्ध अब राजनीतिक और सैन्य दोनों मोर्चों पर है।
- ईरान पर दबाव बढ़ा, लेकिन उसकी जवाबी क्षमता भी उतनी ही मजबूत दिखी।
- शांति अभी भी सबसे बड़ी अनिश्चितता बनी हुई है।

@ भारतश्री ब्यूरो

पश्चिम एशिया में जारी अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच टकराव अब 25वें दिन में पहुंच चुका है। हर गुजरते दिन के साथ हालात और जटिल होते जा रहे हैं। एक तरफ हमलों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा, वहीं दूसरी तरफ बातचीत और सुलह की कोशिशें भी अनिश्चितता के घेरे में हैं।इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का बयान सामने आया है, जिसने इस पूरे संघर्ष को लेकर नई बहस छेड़ दी है। उन्होंने साफ कहा कि ईरान पर हमला करने का फैसला उन्होंने अपने रक्षा मंत्री की सलाह पर लिया था।

हमले के फैसले के पीछे क्या वजह रही

अंतरराष्ट्रीय मीडिया के मुताबिक ट्रम्प ने कहा कि उनके रक्षा मंत्री सबसे पहले उन लोगों में थे, जिन्होंने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का समर्थन किया। उनका मानना था कि ईरान को परमाणु हथियार बनाने से रोकना बेहद जरूरी है और इसके लिए सख्त कदम उठाना ही होगा।ट्रम्प के इस बयान से यह भी साफ हुआ कि यह फैसला अचानक नहीं लिया गया, बल्कि इसके पीछे लंबे समय से चल रही रणनीतिक सोच थी। हालांकि, इस निर्णय को लेकर अमेरिकी सरकार के भीतर पूरी तरह एकमत नहीं था।

अमेरिकी प्रशासन में भी मतभेद

राष्ट्रपति ने यह स्वीकार किया कि उनके ही प्रशासन के भीतर इस मुद्दे पर मतभेद थे। खासतौर पर उपराष्ट्रपति इस फैसले से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। हालांकि उन्होंने खुलकर विरोध भी नहीं किया, लेकिन उनकी असहमति इस बात का संकेत देती है कि अमेरिका के भीतर भी इस युद्ध को लेकर एकराय नहीं है।यह स्थिति इस ओर इशारा करती है कि युद्ध केवल सीमाओं पर ही नहीं, बल्कि राजनीतिक गलियारों में भी अपनी छाया छोड़ रहा है।

अमेरिका का लक्ष्य समझ से परे

रक्षा मंत्री हेगसेथ ने साफ किया कि अमेरिका का मकसद ईरान की सैन्य ताकत को कमजोर करना है। इसमें खास तौर पर मिसाइल, ड्रोन और नौसेना की क्षमताओं को निशाना बनाया जा रहा है। लेकिन जब उनसे पूछा गया कि यह युद्ध कब तक चलेगा, तो उन्होंने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया। यही अनिश्चितता इस पूरे संघर्ष को और ज्यादा चिंताजनक बना रही है।

हमले टालने की रणनीति और कूटनीतिक संकेत

ट्रम्प ने यह भी बताया कि हाल ही में अमेरिका और ईरान के बीच कुछ बातचीत हुई थी, जिसके बाद 15 मुद्दों पर सहमति बनने का दावा किया गया। हालांकि इन मुद्दों की पूरी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है।उन्होंने यह भी कहा कि ईरान के कुछ अहम ठिकानों पर हमले को फिलहाल टाल दिया गया है। पहले जहां 48 घंटे की चेतावनी दी गई थी, वहीं अब कुछ हमलों को कुछ दिनों के लिए रोक दिया गया है।यह कदम कूटनीतिक संकेत के तौर पर देखा जा रहा है, लेकिन इसकी सफलता अभी स्पष्ट नहीं है। दूसरी ओर ईरान ने साफ तौर पर कहा है कि अमेरिका के साथ उसकी कोई बातचीत नहीं हो रही है। ईरान के विदेश मंत्रालय ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि किसी तरह की वार्ता फिलहाल नहीं चल रही। इस बीच पाकिस्तान, मिस्र और तुर्किये जैसे देश इस संकट को कम करने के लिए मध्यस्थता की कोशिश कर रहे हैं।

हमारा मकसद साफ है। ईरान को परमाणु हथियार बनाने से रोकना। यह कदम मजबूरी में उठाना पड़ा, लेकिन अमेरिका अपनी सुरक्षा से समझौता नहीं करेगा।

डोनाल्ड ट्रम्प (अमेरिकी राष्ट्रपति)

ईरान पर हमले यह साबित करते हैं कि मजबूत सैन्य और परमाणु ताकत ही किसी देश की असली सुरक्षा है। हमारा फैसला बिल्कुल सही था।

किम जोंग उन (उत्तरी कोरिया के सर्वोच्च नेता)

पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। भारत हमेशा शांति, संवाद और कूटनीति के रास्ते का समर्थन करता रहा है। सभी पक्षों को संयम बरतते हुए स्थिति को और बिगड़ने से रोकने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

नरेंद्र मोदी (भारत के प्रधानमंत्री)

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

बढ़े बेड, पर राहत अभी दूर

दिल्ली के स्वास्थ्य ढांचे की असली तस्वीर

बजट बड़ा, दावे बड़े, लेकिन ज़मीनी हकीकत में अब भी कमी, देरी और अधूरे इंतज़ाम

- दिल्ली में प्रति 1,000 लोगों पर सिर्फ 1.7 बेड
- 12,893 करोड़ का बजट, लेकिन खर्च अधूरा
- हर तीसरा पद खाली, हर डॉक्टर पर बढ़ता बोझ
- 1,188 नए बेड जुड़े, लेकिन अस्पतालों की संख्या नहीं बढ़ी
- मोहल्ला स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर, इसलिए छोटे मरीज भी बड़े अस्पतालों में

@ आनंद मीणा

दिल्ली का स्वास्थ्य ढांचा कागज़ों पर थोड़ा मजबूत जरूर दिख रहा है, लेकिन ज़मीनी हकीकत अभी भी मरीजों के लिए राहत देने वाली नहीं है। आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के आंकड़े बताते हैं कि राजधानी में अस्पतालों के बेड की संख्या में मामूली बढ़ोतरी हुई है। यह वृद्धि देखने में सकारात्मक लगती है, लेकिन जब इसे दिल्ली की बढ़ती आबादी, मरीजों के दबाव और स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविक जरूरतों के साथ जोड़ा जाता है, तो तस्वीर उतनी संतोषजनक नहीं दिखती।साल 2024-25 में जहां दिल्ली में कुल अस्पताल बेड की संख्या 62,514 थी, वहीं 2025-26 में यह बढ़कर 63,802 हो गई। यानी कुल 1,288 बेड का इजाफा हुआ। यह वृद्धि मुख्य रूप से केंद्र सरकार के अस्पतालों, स्वायत्त संस्थाओं और निजी नर्सिंग होम के जरिए आई है। दूसरी तरफ, नगर निगम और नई दिल्ली नगर पालिका परिषद के अस्पतालों में बेड की संख्या जस की तस बनी हुई है।दिल्ली सरकार के अस्पतालों में जरूर बेड की संख्या 14,380 से बढ़कर 15,659 हो गई, जो लगभग 8.89 प्रतिशत की वृद्धि है। लेकिन यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि अस्पतालों की कुल संख्या 40 ही बनी हुई है। यानी नए अस्पताल नहीं बने, बल्कि मौजूदा अस्पतालों के भीतर ही किसी तरह बेड बढ़ाकर काम चलाया गया।

दिल्ली विधानसभा के बजट सत्र से पहले खीर समारोह हुआ आयोजित

दिल्ली सरकार ने सोमवार को बजट सत्र से पहले विधानसभा में 'खीर' समारोह का आयोजन किया। सीएम गुप्ता ने समारोह में मौजूद स्कूल की बच्चियों का पास बुलाकर अपने हाथों से खीर खिलाई। समारोह संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि आगामी बजट विकास की गति तेज करने, बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने और निवासियों के जीवन स्तर में सुधार लाने पर केंद्रित होगा। इस समारोह में कैबिनेट मंत्रियों और विधायकों के साथ-साथ किसान, चिकित्सक और शिक्षक भी उपस्थित रहे।

मरीजों को राहत क्यों नहीं मिल रही?

सरकार के आंकड़े अपनी जगह हैं, लेकिन अस्पतालों में पहुंचने वाले मरीजों की कहानी कुछ और ही कहती है। ओपीडी में लंबी कतारें, इमरजेंसी में इंतजार और गंभीर मरीजों को समय पर इलाज न मिलना, यह सब आज भी आम बात है।इसके पीछे सबसे बड़ी वजह केवल संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि उनके सही उपयोग का अभाव है। मोहल्ला स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर पड़ती जा रही हैं। जिन क्लीनिकों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का उद्देश्य था कि छोटी बीमारियों का इलाज वहीं हो जाए, वे अपनी भूमिका पूरी तरह निभा नहीं पा रहे हैं।नतीजा यह है कि मामूली परेशानी वाले मरीज भी सीधे बड़े अस्पतालों का रुख करते हैं। इससे बड़े अस्पतालों पर दबाव बढ़ जाता है और असली जरूरतमंद मरीजों को भी समय पर इलाज नहीं मिल पाता।विशेषज्ञों का साफ कहना है कि दिल्ली की सबसे बड़ी चुनौती संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि उनके सही और पूरी क्षमता से इस्तेमाल की है। अगर बजट का पूरा उपयोग हो, समय पर भर्तियां हों और अधूरे प्रोजेक्ट्स तय समय पर पूरे किए जाएं, तो हालात काफी हद तक सुधर सकते हैं।

बड़ा बजट, लेकिन अधूरा खर्च

दिल्ली सरकार ने 2025-26 के बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 12,893 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था। यह रकम छोटी नहीं है और इससे बड़े बदलाव की उम्मीद की जा रही थी। योजना में नए अस्पताल बनाना, बेड बढ़ाना, मोहल्ला स्तर की सेवाओं को मजबूत करना और डॉक्टरों की भर्ती करना शामिल था।लेकिन वास्तविकता यह रही कि इस बजट का बड़ा हिस्सा खर्च ही नहीं हो पाया। नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट और सरकारी आंकड़े बताते हैं कि डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की भर्ती के लिए रखी गई राशि का बड़ा हिस्सा इस्तेमाल नहीं हुआ। दवाइयों और उपकरणों के लिए भी पूरी रकम खर्च नहीं की गई।

सबसे चिंताजनक बात यह रही कि कई अस्पताल परियोजनाएं समय पर पूरी नहीं हो सकीं। दो नए मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना भी अभी तक अधर में लटकी हुई है।इससे साफ है कि समस्या केवल पैसे की नहीं है, बल्कि योजना बनाने और उसे लागू करने की क्षमता की भी है। जब तक बजट का पूरा और सही उपयोग नहीं होगा, तब तक कागज़ों पर बढ़ोतरी का मरीजों को कोई वास्तविक फायदा नहीं मिलेगा।

सरकारी अस्पतालों में स्टाफ की भारी कमी

दिल्ली के सरकारी अस्पतालों की एक बड़ी समस्या डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की कमी है। आंकड़े बताते हैं कि हर तीसरा पद खाली है।डॉक्टरों के 1,364 पदों में से 234 पद खाली हैं, यानी लगभग 17 प्रतिशत।नॉन-टीचिंग विशेषज्ञों के 729 पदों में से 281 पद खाली हैं।टीचिंग विशेषज्ञों के 583 पदों में से 132 पद खाली हैं।इन खाली पदों का सीधा असर मरीजों पर पड़ता है। एक डॉक्टर को जरूरत से ज्यादा मरीज देखने पड़ते हैं, जिससे इलाज की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इमरजेंसी सेवाओं में देरी होती है और गंभीर मरीजों को समय पर ध्यान नहीं मिल पाता।

बिस्तर और सुविधाओं की कमी

दिल्ली में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति को समझने के लिए एक और अहम आंकड़ा है-प्रति 1,000 आबादी पर उपलब्ध बेड।दिल्ली में यह आंकड़ा 2.7 है, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानक 5 का है। यानी राजधानी अभी भी इस मामले में लगभग आधी क्षमता पर ही खड़ी है।सरकारी अस्पतालों में कुल 14,244 बेड हैं, जबकि कुल बेड संख्या 57,686 है। इसका मतलब है कि बड़ी आबादी अब भी सीमित संसाधनों पर निर्भर है।इसके अलावा आईसीयू, सीसीयू, ऑपरेशन थिएटर और ओपीडी जैसी सुविधाएं भी कई अस्पतालों में मरीजों की संख्या के मुकाबले कम पड़ रही हैं। यही कारण है कि गंभीर मरीजों को भी कभी-कभी लंबा इंतजार करना पड़ता है।

अधूरे प्रोजेक्ट्स से जुड़ी उम्मीदें

दिल्ली में कुछ अस्पताल परियोजनाएं ऐसी हैं, जिनसे भविष्य में हालात बेहतर होने की उम्मीद है। ज्वालापुरी, मादीपुर, हस्तसाल और सिरासपुर जैसे इलाकों में चल रहे प्रोजेक्ट्स के पूरा होने पर करीब 3,237 नए बेड जुड़ने की संभावना है।अगर ये परियोजनाएं समय पर पूरी हो जाती हैं, तो सरकारी अस्पतालों पर दबाव कुछ हद तक कम हो सकता है। लेकिन पिछली देरी को देखते हुए यह सवाल बना हुआ है कि क्या ये प्रोजेक्ट्स तय समय पर पूरे हो पाएंगे या नहीं।

दिल्ली में छात्रों को मिलेंगे फ्री लैपटॉप

दिल्ली सरकार ने छात्रों के लिए कल मंगलवार को खजाना खोल दिया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कैबिनेट मीटिंग के बाद मुख्यमंत्री डिजिटल शिक्षा योजना को मंजूरी दे दी। इस योजना के तहत मेधावी छात्रों को मुफ्त में लैपटॉप दिए जाएंगे। इसके अलावा स्टेट और नेशनल खेलने वाले छठी से 12वीं तक के छात्रों को कोचिंग और ट्रेनिंग के लिए 5 लाख रुपये देने की भी घोषणा की गई है।मुख्यमंत्री डिजिटल शिक्षा योजना के तहत 1200 मेधावी छात्रों को मुफ्त में i7 लैपटॉप दिए जाएंगे। लैपटॉप की कीमत 60000 से ज्यादा होगी। इस योजना के लिए दिल्ली सरकार ने 7.5 करोड़ रुपये का बजट रखा है।

क्या विकास की दौड़ में खो रही है हमारी चहचहाहट?

तेजी से घट रही है गौरेया की संख्या, कंक्रीट के शहर और बदलती जीवनशैली ने खड़ा किया बड़ा पर्यावरणीय संकट

हर साल 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है। यह दिन 2010 में भारत की नेचर फॉरएवर सोसाइटी ने शुरू किया था और आज 2026 में भी दुनिया भर में इसे खास तरीके से याद किया जा रहा है। पहले हमारे घरों की छतों पर, बगीचों में और गलियों में गौरैयों की चहचहाहट हर सुबह सुनाई देती थी। लेकिन अब बड़े शहरों में यह आवाज कम होती जा रही है। गौरैया हमारे आसपास की प्रकृति का छोटा सा संदेशवाहक है। अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में कई जगहों पर इसकी संख्या तेजी से घटी है। जैसे आंध्र प्रदेश में करीब 88 प्रतिशत तक कमी आई है। केरल, गुजरात और राजस्थान में लगभग 20 प्रतिशत की गिरावट हुई है। तटीय इलाकों में 70 से 80 प्रतिशत तक गौरैया कम हो गई हैं। कई शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु में पहले जहां सैकड़ों गौरैया दिखती थीं, अब मुश्किल से कुछ ही नजर आती हैं। सटीक कुल संख्या पूरे भारत में बताना मुश्किल है क्योंकि कोई नई गिनती नहीं हुई, लेकिन ये आंकड़े दिखाते हैं कि पिछले 10-20 सालों में शहरों और गांवों के कुछ हिस्सों में भारी नुकसान हुआ है। गौरैया सिर्फ एक पक्षी नहीं है। यह पर्यावरण के स्वास्थ्य की निशानी है। अगर गौरैया कम हो रही है तो इसका मतलब है कि हवा, पानी और जमीन सब प्रभावित हो रहे हैं।

गौरैया केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि हमारे पर्यावरण संतुलन की अहम कड़ी है। हमें विकास के साथ प्रकृति संरक्षण को भी प्राथमिकता देनी होगी, तभी आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित भविष्य मिलेगा।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री, भारत)

गौरैया की घटती संख्या हमें चेतावनी दे रही है कि हमने प्रकृति के साथ संतुलन बिगाड़ दिया है। छोटे-छोटे प्रयास जैसे पेड़ लगाना और कीटनाशक कम करना बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

वंदना शिवा (पर्यावरण कार्यकर्ता)

- 2010 में शुरू हुआ विश्व गौरैया दिवस, 2026 में भी बचाने की जंग जारी
- आंध्र प्रदेश में 88 प्रतिशत तक घटी गौरैया, तटीय इलाकों में 70-80 प्रतिशत कमी
- दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु जैसे शहरों में तेजी से गायब होती चहचहाहट
- कंक्रीट के जंगल और कीटनाशक बने सबसे बड़े दुश्मन
- गौरैया की कमी सिर्फ एक पक्षी नहीं, पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन का संकेत
- नेस्टिंग बॉक्स और पेड़ लगाकर लौट सकती है उम्मीद
- विकास बनाम प्रकृति, अब संतुलन बनाने की सबसे बड़ी चुनौती

कंक्रीट के शहर और गौरैयों का सफर

आज के शहर कंक्रीट के जंगल बन गए हैं। ऊंची-ऊंची इमारतें, शीशे की दीवारें और सड़कें हर जगह फैल रही हैं। पुराने घरों में छेद और छतें होती थीं जहां गौरैया घोंसला बनाती थी। लेकिन नई बिल्डिंगों में ऐसी जगह नहीं बचती। पेड़ कट रहे हैं और हरी जगहें कम हो रही हैं। यही वजह है कि घरेलू गौरैया तेजी से गायब हो रही है। प्रदूषण भी बड़ा कारण है। कारों की धुआं, शोर और मोबाइल टावरों से निकलने वाली तरंगें गौरैयों को परेशान करती हैं। खेती में कीटनाशक दवाओं का ज्यादा इस्तेमाल होने से कीड़े कम हो गए हैं, जो गौरैयों के बच्चे खाते हैं। कई अध्ययन कहते हैं कि शहरों में गौरैया पर तनाव ज्यादा बढ़ गया है। लेकिन क्या विकास सिर्फ बुरा है? नहीं। विकास से हमें अच्छी सड़कें, घर, अस्पताल और नौकरियां मिली हैं। लोग बेहतर जीवन जी रहे हैं। सुविधाएं बढ़ी हैं। फिर भी सवाल उठता है कि क्या यह विकास संतुलित है। अगर प्रकृति को नुकसान पहुंचाकर हम आगे बढ़ रहे हैं तो यह सही नहीं। गौरैया जैसे छोटे पक्षी हमें चेतावनी दे रहे हैं। कंक्रीट के शहर सिर्फ पक्षियों को नहीं बल्कि हमारे दिल को भी कठोर बना रहे हैं। हम सुबह की चहचहाहट भूल गए हैं। अब सिर्फ ट्रैफिक का शोर सुनते हैं। कई जगहों पर लोग अब नेस्टिंग बॉक्स और हरी दीवारें बना रहे हैं ताकि गौरैया लौट आए।

क्या हम अपनी यादें खो रहे हैं?

भारतीय संस्कृति में गौरैया हमेशा से जुड़ी रही है। बचपन में हम गौरैयों को दाना डालते थे। घर के आंगन में उनकी चहचहाहट से सुबह शुरू होती थी। कहानियों और गीतों में गौरैया का जिक्र मिलता है। लेकिन आज सुविधा के नाम पर हम सब बदल रहे हैं। नए घरों में कोई जगह नहीं जहां गौरैया घोंसला बना सके। हमने प्लास्टिक और कंक्रीट को चुना। इससे हमारी संवेदनाएं भी कठोर हो रही हैं। पहले लोग प्रकृति से जुड़े रहते थे। अब हम एसी कमरों में बंद रहते हैं। गौरैया गायब होने का मतलब है कि हम अपनी जड़ों से दूर जा रहे हैं। क्या हम सिर्फ आराम चाहते हैं और बाकी सब भूल गए? विकास ने हमें मोबाइल, इंटरनेट और तेज जीवन दिया। लेकिन इसके साथ हमने शांति खो दी। बच्चे अब गौरैया नहीं देखते। वे स्क्रीन पर खेलते हैं। यह सांस्कृतिक नुकसान है। फिर भी कुछ लोग पुरानी परंपराओं को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। वे गौरैया के लिए पानी के बर्तन रखते हैं और घोंसले बनाते हैं। यह दिखाता है कि हम अभी भी अपनी जड़ों से जुड़ सकते हैं। सुविधा अच्छी है लेकिन अगर प्रकृति को नजरअंदाज किया तो हमारी संस्कृति कमजोर हो जाएगी।

भारत में गौरैयों की संख्या: पिछले सालों में कितना नुकसान हुआ?

भारत में घरेलू गौरैया की सटीक कुल संख्या बताना मुश्किल है क्योंकि कोई देशव्यापी नई गिनती नहीं हुई। लेकिन कई अध्ययन बताते हैं कि पिछले कुछ सालों में भारी गिरावट आई है। आंध्र प्रदेश में 88 प्रतिशत तक गौरैया कम हो गई। केरल, गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में 20 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। तटीय क्षेत्रों में 70 से 80 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। कोलकाता, हैदराबाद और अन्य बड़े शहरों में पहले जहां गौरैया आम थी, अब वहां बहुत कम दिखती है। एक अध्ययन कहता है कि कुछ जगहों पर 60 प्रतिशत से ज्यादा गिरावट हुई। पिछले 20 सालों में शहरों और कुछ गांवों में लाखों गौरैया प्रभावित हुईं। गौरैया पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। यह अभी भी देश के कई हिस्सों में है लेकिन संख्या बहुत कम हो गई है। वजहें साफ हैं। शहरों का विस्तार, पुराने घरों का नया रूप और प्रदूषण। खेती में दवाओं का इस्तेमाल बढ़ा तो कीड़े कम हुए। मोबाइल टावरों की तरंगें भी एक वजह बताई जाती हैं। लेकिन अच्छी बात यह है कि कुछ जगहों पर प्रयास से संख्या बढ़ रही है। नेस्टिंग बॉक्स लगाने और पेड़ बचाने से गौरैया लौट रही है।

हमने क्या पाया और क्या खोया?

हम विकास के नाम पर कई चीजें पाई हैं। अच्छी सड़कें, तेज गाड़ियां, बड़े घर और नई तकनीक। जीवन आसान हुआ है। लेकिन प्रकृति के साथ हमने क्या खोया? गौरैया जैसी छोटी खुशियां, साफ हवा और संतुलित जीवन। आने वाली पीढ़ी को हम क्या छोड़ रहे हैं? अगर आज का रास्ता जारी रहा तो उन्हें कंक्रीट के शहर मिलेंगे जहां पक्षी कम होंगे। लेकिन हम तैयार हैं संतुलित जीवन के लिए। कई लोग अब ग्रीन बिल्डिंग बना रहे हैं। पेड़ लगा रहे हैं और प्रदूषण कम करने के उपाय कर रहे हैं। विश्व गौरैया दिवस जैसे कार्यक्रम जागरूकता बढ़ा रहे हैं। हमने सुविधा पाई लेकिन खुशी और स्वास्थ्य का नुकसान भी हुआ। सवाल यह है कि क्या हम बदल सकते हैं। हां, अगर हम विकास को प्रकृति के साथ जोड़ें। जैसे इमारतों में घोंसले के लिए जगह रखें, कीटनाशक कम करें और हरी जगहें बढ़ाएं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

रात 3 बजे क्या हुआ, हादसा या प्लान्ड किलिंग

फरसा वाले बाबा की मौत पर गहराता सस्पेंस

गौरक्षक संत की मौत पर पुलिस ने बताया सड़क हादसा, समर्थकों ने उठाए हत्या के सवाल; सियासत और संत समाज में उबाल

- कोहरे की रात या साजिश की आहट, सच्चाई अब भी धुंध में
- पुलिस का दावा हादसा, समर्थकों का आरोप सुनियोजित हत्या
- गौरक्षा के नाम पर उठे सवाल, क्या सुरक्षित हैं ऐसे निडर लोग
- सियासत गरम, संत समाज आक्रोश में, मथुरा बना चर्चा का केंद्र
- जांच पर टिकी निगाहें, न्याय की मांग के बीच बढ़ता तनाव

मथुरा के कोसीकलां इलाके में 21 मार्च 2026 को सुबह करीब 3 से 4 बजे एक दुखद घटना हुई। ब्रज क्षेत्र के मशहूर गौरक्षक संत चंद्रशेखर, जिन्हें सब फरसा वाले बाबा कहते थे, की मौत हो गई। बाबा 65 साल के थे और आजनौख गांव में गोशाला चलाते थे। वे हमेशा हाथ में फरसा लेकर गायों की रक्षा करते थे। उनके समर्थकों का कहना है कि उन्हें गौ तस्करों की सूचना मिली थी। वे अपनी मोटरसाइकिल पर निकले और एक संदिग्ध कंटेनर को रोका। लेकिन पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे दूसरे ट्रक ने उन्हें कुचल दिया। समर्थक कहते हैं कि यह गौ तस्करों की सुनियोजित हत्या थी। घटना नवीपुर गांव के पास दिल्ली आगरा हाईवे पर हुई। घना कोहरा था, जिससे विजिबिलिटी कम थी। बाबा के समर्थक सड़क पर उतर आए, हाईवे जाम कर दिया और पथराव किया। पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। यह घटना पूरे इलाके में तनाव फैला गई। लोग कह रहे हैं कि गौरक्षा के लिए बाबा ने अपना बलिदान दे दिया। लेकिन पुलिस की जांच में अब तक हत्या के सबूत नहीं मिले। यह एक सड़क हादसा लगता है। बाबा का नाम ब्रज में बहुत बड़ा था। वे गौ तस्करी रोकने में हमेशा आगे रहते थे। उनकी मौत से गौरक्षक और स्थानीय लोग बहुत दुखी हैं। समर्थक न्याय की मांग कर रहे हैं। इस घटना ने गौ रक्षा आंदोलन को नया मोड़ दे दिया है। अब लोग सोच रहे हैं कि क्या गाय बचाने वाले लोग सुरक्षित हैं। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। ट्रक के ड्राइवर की भी बाद में मौत हो गई। पूरा मामला अभी जांच के अधीन है। लोग दोनों पक्ष सुन रहे हैं और सच्चाई का इंतजार कर रहे हैं। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि कानून और व्यवस्था कैसे मजबूत बने।

पुलिस और डीएम का बयान: साफ कहा, यह हादसा था

मथुरा पुलिस और प्रशासन ने घटना पर अपना स्पष्ट पक्ष रखा। एसएसपी श्लोक कुमार सिंह ने कहा कि रात 3 से 4 बजे के बीच बाबा ने नागालैंड नंबर के कंटेनर को संदिग्ध मानकर रोका। घना कोहरा था। पीछे से राजस्थान नंबर का ट्रक आया और टक्कर मार दी। बाबा की मौके पर मौत हो गई। उन्होंने साफ बताया कि कंटेनर में साबुन, शैंपू और किराने का सामान था। गौ तस्करी का कोई मामला नहीं। दूसरा ट्रक तारों से भरा था। दोनों वाहनों के ड्राइवर और परिचालक राजस्थान के अलवर के रहने वाले हैं। ड्राइवर घायल है और पुलिस हिरासत में है। एडीजी लॉ एंड ऑर्डर अमिताभ यश ने भी कहा कि अब तक की जांच में हत्या जैसे कोई तथ्य नहीं मिले। यह पूरी तरह हादसा लगता है। मथुरा डीएम सीपी सिंह ने भी जानकारी दी कि बाबा गो वंश के शक में कंटेनर की चेकिंग कर रहे थे। लेकिन इसमें शैंपू और साबुन भरा था। उन्होंने कहा कि स्थिति अब नियंत्रण में है। पुलिस ने हाईवे जाम हटाने के लिए जरूरी बल प्रयोग किया। पथराव करने वालों पर कार्रवाई होगी। डीएम और पुलिस ने लोगों से अपील की कि वे शांति बनाए रखें और जांच पर भरोसा करें। उन्होंने कहा कि पूरी जांच निष्पक्ष तरीके से चल रही है। अगर कोई गलती पाई गई तो कड़ी कार्रवाई होगी। बाबा के परिवार को सहायता देने का भी वादा किया गया। यह बयान लोगों को थोड़ी राहत दे रहा है लेकिन समर्थक अभी भी हत्या का आरोप लगा रहे हैं। पुलिस ने नाकाबंदी कर आरोपी तलाश शुरू कर दी है। डीएम सीपी सिंह मौके पर पहुंचे और स्थिति संभाली। पुलिस का कहना है कि कोहरा मुख्य वजह था। अब लोग सोच रहे हैं कि भविष्य में ऐसी घटनाएं कैसे रोकी जाएं। यह बयान घटना को सड़क दुर्घटना बताते हुए जांच को आगे बढ़ा रहा है।

योगी से अखिलेश तक अलग अलग स्वर

इस घटना पर कई राजनेताओं ने अपनी प्रतिक्रिया दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तुरंत संज्ञान लिया। उन्होंने परिवार के प्रति संवेदना जताई और अधिकारियों को निर्देश दिए कि आरोपियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि कानून हाथ में लेने वालों और गौ तस्करी में शामिल अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। सीएम ने अफसरों से कहा कि मौके पर पहुंचकर तुरंत काम करें। दूसरी ओर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सरकार और पुलिस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मथुरा में हत्या हुई। इससे पहले वाराणसी में बच्ची की हत्या और गोरखपुर में भी ऐसी घटनाएं हुईं। पुलिस भाजपा का काम कर रही है इसलिए अपना काम नहीं कर रही। अगर पुलिस अपना काम करे तो भाजपा सरकार गिर जाएगी। अखिलेश ने कहा कि हम जानते हैं कहां क्या गलत हो रहा है। यह लगातार हो रहा है। अन्य राजनेता भी इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। कुछ भाजपा नेता सीएम के साथ खड़े हैं और कह रहे हैं कि जांच होगी और न्याय मिलेगा। विपक्षी दल पुलिस की भूमिका पर सवाल उठा रहे हैं। एक नेता ने कहा कि गौरक्षा के नाम पर लोग मर रहे हैं। यह राजनीतिक बहस को बढ़ा रहा है। राजनेता दोनों पक्ष रख रहे हैं। कुछ न्याय की मांग कर रहे हैं तो कुछ सरकार की आलोचना। यह दिखाता है कि घटना ने पूरे राज्य का ध्यान खींचा है। लोग उम्मीद कर रहे हैं कि राजनीति से ऊपर उठकर सच्चाई सामने आए। सीएम के निर्देश और अखिलेश की आलोचना से लगता है कि मामला गंभीर है। अन्य राजनेता भी सदमे में हैं और परिवार को सहयोग का वादा कर रहे हैं। यह प्रतिक्रियाएं दिखाती हैं कि गौ रक्षा हर पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन तरीका अलग अलग है। अब जांच पर सबकी नजर है।

धर्म गुरुओं का आक्रोश: संत समाज में गहरा दुख

धर्म गुरुओं ने बाबा की मौत पर गहरा दुख जताया। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि फरसा वाले बाबा गौ माता की रक्षा के लिए हमेशा संकल्पित रहते थे। उनकी अचानक मौत से पूरे संत समाज और गौ भक्तों के मन में गहरा क्षोभ है। उन्होंने सरकार की आलोचना की और कहा कि सरकार कुछ कह रही है और कुछ और हो रहा है। गौ रक्षकों पर प्रहार हो रहे हैं जबकि वादे अलग थे। शंकराचार्य ने मांग की कि दोषियों को तत्काल पकड़ा जाए और कड़ी कार्रवाई हो। पुलिस को निष्पक्ष जांच कर दूध का दूध पानी का पानी करना चाहिए। उन्होंने मन में आक्रोश व्यक्त किया। संत समाज के अन्य गुरु भी रोष में हैं। उन्होंने कहा कि गौ हत्यारों का मन बढ़ा हुआ है। बाबा जैसे निडर संत की मौत से गौ रक्षा आंदोलन कमजोर नहीं होना चाहिए।

कई धर्म गुरुओं ने वीडियो संदेश में बाबा को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने अपील की कि लोग शांति रखें लेकिन न्याय की लड़ाई जारी रखें। संतों का कहना है कि गौ रक्षा धर्म का हिस्सा है और सरकार को इसे मजबूत बनाना चाहिए। यह प्रतिक्रियाएं दिखाती हैं कि बाबा सिर्फ एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरे संत समुदाय के प्रतीक थे। धर्म गुरु चाहते हैं कि पुलिस सच्चाई सामने लाए। उन्होंने युवाओं से गौ रक्षा में आगे आने की बात कही। यह आक्रोश दिखाता है कि धार्मिक भावनाएं कितनी जुड़ी हुई हैं। संत समाज ने परिवार को सांत्वना दी और कहा कि बाबा का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। कई गुरुओं ने सीएम से भी अपील की कि जांच तेज हो। यह सब प्रतिक्रियाएं घटना को धार्मिक नजरिए से देख रही हैं। लोग अब संतों के शब्दों पर गौर कर रहे हैं।

जांच और शांति की अपील

अब सबकी नजर जांच पर है। पुलिस ने मामले को सड़क हादसा मानते हुए आगे बढ़ाया है लेकिन समर्थक हत्या का दावा कर रहे हैं। डीएम सीपी सिंह और एसएसपी ने स्थिति नियंत्रण में बताई। हाईवे पर जाम हटा दिया गया। लेकिन तनाव अभी है। राजनेता और धर्म गुरु दोनों पक्ष रख रहे हैं। लोग चाहते हैं कि निष्पक्ष जांच हो। अगर गौ तस्करी साबित हुई तो सख्त सजा हो। अगर हादसा है तो भी जिम्मेदारों पर कार्रवाई हो। यह घटना हमें याद दिलाती है कि गौ रक्षा और कानून के बीच संतुलन जरूरी है। मथुरा में शांति बनाए रखने की अपील की जा रही है। परिवार को मदद पहुंचाई जा रही है। बाबा की याद में लोग गोशाला और गौ रक्षा कार्यक्रम चला रहे हैं। जांच पूरी होने पर सच्चाई सामने आएगी। यह मामला सोचने पर मजबूर करता है कि ऐसे निडर लोगों की सुरक्षा कैसे हो। सब मिलकर प्रयास करें तो भविष्य बेहतर बनेगा। घटना ने पूरे देश का ध्यान खींचा है। अब समय है सही कदम उठाने का।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 23 मार्च 2026 , विक्रम संवत 2080

क्या हम भगत सिंह के सपनों के गुनहगार बन चुके हैं?

अमर शहीद भगत सिंह ने कहा था कि हमारी लड़ाई सिर्फ साम्राज्यवादी अंग्रेजों से ही नहीं है,वरन हमारी लड़ाई तब तक चलती रहेगी,जब तक एक हाथ दूसरे हाथ का शोषण करता रहेगा।जब तक कोई बेरोजगार अपने सपनों की बलि देता हुआ आंखों में आंसुओं की धार लिए इधर उधर भटकता रहेगा।कोई व्यक्ति, धर्म या जाति संप्रदाय के आधार पर अपमानित होता रहेगा।कोई बेबस अपनी यातनाओं में लुंठित होकर अपना व्यक्तित्व खो देगा।जब तक देश की माताओं बहनों की आंखों में आंसू बहते रहेंगे,आजादी की लड़ाई तब तक चलती रहेगी। आज देश में क्या हो रहा है ? बेरोजगारों की एक लंबी कतार है,सरकारी नौकरियों में बंदरबांट चल रही है,करोड़ों पद रिक्त चल रहे हैं,जानबूझकर चालाकी से भरे नहीं जा रहे हैं,अस्पतालों में डाक्टरों की जगहों पर केवल कंपाउंडरों से काम चलाया जा रहा है। विद्यालय में शिक्षकों का अभाव है और भारत विश्व गुरु बनने की कोशिश कर रहा है।समता ममता पर आधारित समाज बनाने की जगह नए नए विभाजनकारी कानूनों की होड़ लगा दी गई है।जातिवाद संप्रदायवाद की खाई को चौड़ा करने का प्रयास शासन की तरफ से किया जा रहा है।प्रतिभाओं को कुटिल नजरों से देखते हुए नए नए कानून लेकर दौड़ लगा रहे हैं ताकि प्रतिभाओं को रोका जा सके। प्रतिनिधित्व के नाम पर ऐसे लोगों को वहां बैठा दिया जा रहा है, जहां से देश, समाज और मानवता का नाश सुनिश्चित है।ऐसे में हम शहीदों के सपनों की बलि चढ़ा देने पर आमादा हैं।

विजयशंकर पाण्डेय

वैश्विक शक्ति संतुलन की जंग या नेतृत्व की होड़?

@ बजरंग मुनि

अमेरिका और ईरान का युद्ध दो व्यक्तियों का टकराव है एक तरफ ट्रंप चाहते हैं कि वह सारी दुनिया के लोकतांत्रिक देशों का नेतृत्व करें और दुनिया के सभी लोकतांत्रिक देश ट्रंप का नेतृत्व स्वीकार कर ले दूसरी तरफ खामनेई परिवार यह चाहता है कि मुस्लिम देश ईरान का नेतृत्व स्वीकार करें। दो तानाशाहों के बीच यह युद्ध इस बात पर चल रहा है की दुनिया दो गुटों में बंट जाए और दोनों अलग-अलग बट कर अमेरिका या खामनेई के नेतृत्व के झंडे तले खड़े हो जाएं। स्पष्ट है कि भारत का झुकाव लोकतांत्रिक देश के तरफ है लेकिन भारत ट्रंप को अपना नेता मानने के लिए तैयार नहीं है अन्य मुस्लिम देश भी ईरान को अपना नेता मानने के लिए तैयार नहीं है भले ही उनका धार्मिक झुकाव ईरान की तरफ है। ऐसे ही कालखंड में अनेक अन्य लोकतांत्रिक देश भी ईरान के खिलाफ हैं लेकिन ट्रपको अपना नेता मानने के लिए तैयार नहीं है रूस और चीन भी अमेरिका के खिलाफ हैं लेकिन वह इरान को अपना नेता मानने के लिए तैयार नहीं है। ऐसी विकट परिस्थिति में ट्रंप और इरान एक दूसरे से अलग-अलग पडते जा रहे हैं। दोनों दिन-रात अपने साथियों को साथ देने की गुहार लगा रहे हैं लेकिन अभी तक कोई सामने नहीं आया। दोनों युद्ध कर रहे हैं कौन जीतेगा कौन हारेगा यह पता नहीं है लेकिन दुनिया ट्रंप और इरान को नेता मानने के लिए तैयार नहीं है भले ही दुनिया लोकतांत्रिक और तानाशाही के बीच बटी हुई जरूर है। भारत का आम हिंदू ईरान के खिलाफ है भले ही उनमें से नकली गांधीवादी ईरान के पक्ष में दिन-रात लिखते रहते हैं।

ईरान इजरायल युद्ध में हम देख रहे हैं कि भारत में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो ईरान के साथ खड़े हैं वे जानते हैं कि इरान कभी मानव अधिकारों की चिंता नहीं करता ईरान महिलाओं को समान अधिकार नहीं देता ईरान बेगुनाह लोगों पर हजारों गोलियां चलवा सकता है ईरान दूसरे देशों में अपने गुप्तचर भेज कर उन्हें अस्थिर कर सकता है.इन सब के बाद भी भारत के कई लोग किसी स्वार्थ वर्ष या धर्मांध होकर ईरान का समर्थन करते हैं. अभी आपने देखा होगा कि ईरान ने यह घोषणा की थी कि इजरायल के प्रधानमंत्री नितिन याहू मारे गए हैं लेकिन घोषणा के कुछ समय बाद ही नेता न्यायाहू जिंदा हो गए उन्होंने अपनी जिंदगी का प्रमाण दे दिया दूसरी ओर इसराइल ने घोषणा की थी की ईरान के सुलेमानी मारे गए हैं ईरान ने इस घोषणा के बाद भी उनके जीवित रहने का दावा किया और दावा ही नहीं किया उनके हाथ से लिखा हुआ एक पत्र भी प्रकाशित कर दिया. आश्चर्य है कि ईरान ने दूसरे दिन उस जिंदा आदमी को मरा हुआ घोषित कर दिया क्योंकि यदि वह जीवित था तो पत्र नहीं लिख सकता था अब पत्र लिखा था तो आज भी जीवित है अब आप विचार करिए की जो लोग ईरान के पक्षधर है वह किस प्रकार के पतित रोग हैं।

एक और बात कहना चाहूंगा कि सारी दुनिया में जहां-जहां भी युद्ध चल रहे हैं उनमें मुसलमान एक पक्ष अवश्य है। दो अरब के आसपास है लेकिन वह युद्ध सबसे लड़ते ही रहते हैं यहां तक कि यदि कोई युद्ध लड़ने के लिए ना मिले तो आपस में ही शिया सुन्नी बनकर लड़ने लगते हैं और अगर शिया सुन्नी भी न हों तो आपस में दोनों गुट बनाकर लड़ेंगे जरूर। आप देख लीजिए कि वर्तमान में ईरान इजरायल का युद्ध हो रहा है उसमें एक पक्ष शिया है दूसरी ओर सुन्नी पक्ष पूरी तरह से तटस्थ है वह आंशिक रूप से ईरान के खिलाफ झुका हुआ है। आप इसराइल हमास उसका युद्ध देख लीजिए एक पक्ष शिया है और दूसरा पक्ष यहूदी है। लेकिन अगर आप पाकिस्तान और अफगानिस्तान का युद्ध देखेंगे दोनों पक्ष सुन्नी हैं। इनमें कोई पक्ष सिया नहीं है। आखिर यह सवाल दुनिया में मुंह बाए खड़ा है की लड़ने भीडने में सबसे अधिक आगे मुसलमान ही क्यों रहता है । क्या उसके किसी धर्म ग्रंथ में दोष है अथवा उसे माता-पिता से इस प्रकार की कोई शिक्षा मिलती है अथवा उसके जो मदरसे हैं मदरसे इस प्रकार की शिक्षा देते हैं अथवा उनके अंदर कोई अन्य जगह से संस्कार आ जाता है जिसके कारण वह लड़ने लगते हैं। कोई ना कोई कारण तो ऐसा जरूर है जिसके कारण मुसलमान दिन-रात एक दूसरे से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहता है । यहां तक कि अगर उसे कोई ना मिले तो अकेला ही सपने में भी अपने से लड़ता रहेगा। आप किसी मुसलमान को गहराई से वैज्ञानिक खोज तरीके से खोज कर देख लीजिए सपने में लड़ता जरूर मिलेगा। तो यह एक मनोवैज्ञानिक सवाल है कि आखिर मुसलमान इस तरह लड़ता क्यों हैऔर इसका दोष किसका है।

जुबानी तीर

“ एलपीजी संकट ने पूरे देश में घबराहट पैदा कर दी है इसका असर गरीब, मध्यम वर्ग, होटल, हॉस्टल और आम घरों पर पड़ रहा है।जिस सिलेंडर पर कभी सरकार राहत देने की बात करती थी, वही आज महंगाई का सबसे बड़ा प्रतीक बन गया है।

मल्लिकार्जुन खड़गे (कांग्रेस अध्यक्ष)

“ सरकार कहती है कि कीमतें बाद में कम होंगी, लेकिन जो चीज महंगी हो जाती है, वह आसानी से सस्ती नहीं होती।सरकार महंगाई के असली मुद्दों से ध्यान हटाकर दूसरी बातों में उलझाए हुए है, जबकि सच्चाई यह है कि लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी पर सबसे ज्यादा असर गैस के दामों ने डाला है।

अखिलेश यादव (सपा प्रमुख)

“ गैस की कमी को लेकर अफवाहों से बचना चाहिए और आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में उतार-चढ़ाव का असर पड़ता है, लेकिन इसके बावजूद सरकार संतुलन बनाने की कोशिश करती है, ताकि आम उपभोक्ताओं पर ज्यादा बोझ न पड़े।

हरदीप सिंह पूरी (पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री)

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@ bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

व्रत में स्वस्थ रहने का आयुर्वेदिक तरीका

भारतीय संस्कृति में व्रत केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि का एक समग्र साधन भी है। चाहे नवरात्रि का व्रत हो, एकादशी का उपवास या सावन-प्रदोष का व्रत, हर व्रत का अपना आध्यात्मिक महत्व है। परंतु अक्सर देखा जाता है कि लोग व्रत रखते समय स्वास्थ्य की उपेक्षा कर बैठते हैं, जिससे कमजोरी, एसिडिटी, सिरदर्द और थकान जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। आयुर्वेद के अनुसार यदि व्रत को सही विधि और संतुलन के साथ किया जाए, तो यह शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है।आयुर्वेद व्रत को उपवास कहता है, जिसका अर्थ है स्वयं के निकट रहना। इसका आशय केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि इंद्रियों और मन का संयम भी है। इसलिए व्रत करते समय केवल खान-पान ही नहीं, बल्कि दिनचर्या और मानसिक स्थिति पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

व्रत से पहले की तैयारी

आयुर्वेद के अनुसार किसी भी व्रत को शुरू करने से पहले शरीर को तैयार करना जरूरी होता है। व्रत से एक दिन पहले हल्का और सुपाच्य भोजन करना चाहिए, जैसे मूंग दाल, खिचड़ी या सब्जियों का सूप। तला-भुना और भारी भोजन व्रत के दौरान समस्या पैदा कर सकता है।इसके अलावा पर्याप्त नींद लेना भी आवश्यक है, क्योंकि थका हुआ शरीर उपवास को सही तरीके से सहन नहीं कर पाता।

जल का महत्व

व्रत के दौरान शरीर में पानी की कमी होना सबसे बड़ी समस्या होती है। आयुर्वेद के अनुसार जल ही जीवन का आधार है, इसलिए व्रत में समय-समय पर पानी पीते रहना चाहिए। यदि फलाहार व्रत है, तो नारियल पानी, नींबू पानी या छाछ का सेवन लाभकारी होता है। यह शरीर को हाइड्रेट रखने के साथ-साथ इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखता है।ध्यान रखें कि बहुत ठंडा पानी न पिएं, क्योंकि यह पाचन अग्नि को कमजोर करता है।

फलाहार का सही चयन

व्रत के दौरान क्या खाया जाए, यह बहुत महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के अनुसार ऐसे फल और आहार लेने चाहिए जो शरीर को ऊर्जा दें और आसानी से पच जाएं।

केला, सेब, पपीता, अनार जैसे फल उत्तम माने जाते हैं। साथ ही साबूदाना, कुट्टू का आटा, सिंघाड़े का आटा आदि का सीमित मात्रा में सेवन किया जा सकता है।अक्सर लोग व्रत में तले हुए पकवान जैसे साबूदाना वड़ा या चिप्स अधिक खा लेते हैं, जो पाचन को खराब कर देते हैं। इससे बचना चाहिए।

पाचन अग्नि को बनाए रखना

आयुर्वेद में अग्नि को शरीर का मूल तत्व माना गया है। व्रत के दौरान यदि पाचन अग्नि कमजोर हो जाती है, तो गैस, अपच और एसिडिटी जैसी समस्याएं होती हैं।इससे बचने के लिए अदरक, काली मिर्च या सेंधा नमक का हल्का प्रयोग किया जा सकता है।व्रत खोलते समय भी अचानक भारी भोजन न करें, बल्कि धीरे-धीरे हल्के आहार से शुरुआत करें।

मानसिक संतुलन और ध्यान

व्रत केवल शरीर का नहीं, बल्कि मन का भी अभ्यास है। आयुर्वेद और योग दोनों ही मानसिक शांति को अत्यधिक महत्व देते हैं।व्रत के दौरान ध्यान, प्राणायाम और सकारात्मक विचारों का अभ्यास करना चाहिए। इससे तनाव कम होता है और शरीर में ऊर्जा बनी रहती है।क्रोध, चिंता और नकारात्मक भावनाएं शरीर की ऊर्जा को कम कर देती हैं, इसलिए इनसे बचना चाहिए।

दिनचर्या और विश्राम का महत्व

व्रत के दौरान अत्यधिक शारीरिक परिश्रम से बचना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार शरीर को संतुलित गतिविधि की आवश्यकता होती है।हल्की सैर, योग और स्ट्रेचिंग लाभकारी होते हैं, लेकिन भारी व्यायाम या ज्यादा काम करने से कमजोरी बढ़ सकती है।पर्याप्त विश्राम लेना भी जरूरी है, ताकि शरीर अपनी ऊर्जा को संतुलित रख सके।

विशेष स्थितियों में सावधानी

हर व्यक्ति की शारीरिक प्रकृति (वात, पित्त, कफ) अलग होती है, इसलिए व्रत का तरीका भी उसी अनुसार होना चाहिए।गर्भवती महिलाएं, बुजुर्ग, मधुमेह या अन्य गंभीर रोगों से पीड़ित लोगों को व्रत रखने से पहले चिकित्सक की सलाह अवश्य लेनी चाहिए।यदि व्रत के दौरान अत्यधिक कमजोरी, चक्कर या उल्टी जैसी समस्या हो, तो तुरंत व्रत तोड़ देना ही उचित है।

व्रत खोलने की सही विधि (पारण)

आयुर्वेद के अनुसार व्रत खोलना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि व्रत रखना।व्रत समाप्त करते समय सबसे पहले गुनगुना पानी या नींबू पानी लें, फिर हल्का भोजन जैसे खिचड़ी, दाल या फल लें।अचानक भारी, मसालेदार या तला हुआ भोजन करने से पाचन तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।व्रत केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि यह शरीर को डिटॉक्स करने और मानसिक संतुलन बनाए रखने का एक वैज्ञानिक तरीका भी है।

आयुर्वेद के सिद्धांतों का पालन करते हुए यदि व्रत किया जाए, तो यह न केवल आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होता है, बल्कि शरीर को भी स्वस्थ और ऊर्जावान बनाता है।इसलिए अगली बार जब आप व्रत रखें, तो केवल आस्था ही नहीं, बल्कि अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। संतुलित आहार, उचित जल सेवन, मानसिक शांति और सही दिनचर्या के साथ किया गया व्रत ही सच्चे अर्थों में फलदायी होता है।

पाठकों के सवाल

क्या आपको स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या है और आप उसका समाधान आयुर्वेद के माध्यम से जानना चाहते हैं? अब आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। आपके द्वारा भेजे गए चुनिंदा प्रश्नों का उत्तर अनुभवी आयुर्वेदाचार्य द्वारा दिया जाएगा और उन्हें इस पेज पर प्रकाशित किया जाएगा।

अपने सवाल हमें ईमेल करें

hi@bharatshri.com

कृपया अपने सवाल के साथ अपनी उम्र, शहर और समस्या का संक्षिप्त विवरण अवश्यलिखें, ताकि विशेषज्ञ सही सलाह दे सकें।

प्रश्न:

मेरा नाम मनोज है। मेरी उम्र 45 वर्ष है। मुझे व्रत के दौरान गैस और एसिडिटी की समस्या हो जाती है। क्या करूं?

उत्तर:

(डॉ पारस नाथ)(BAMS)

व्रत में लंबे समय तक खाली पेट रहने और तले-भुने फलाहार लेने से गैस व एसिडिटी बढ़ जाती है। इससे बचने के लिए दिनभर में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में फल, नारियल पानी या छाछ लेते रहें। अदरक के छोटे टुकड़े पर सेंधा नमक लगाकर लेने से पाचन अग्नि संतुलित रहती है।

व्रत खोलते समय भी हल्का और सुपाच्य भोजन ही लें, अचानक भारी भोजन करने से समस्या और बढ़ सकती है।

भक्ति, वैराग्य और सेवा का अद्वितीय संगम

सन्त कृष्णदास जी का अलौकिक जीवन

सन्त कृष्णदास जी श्रीनाथ जी के राज्य के परम भगवदीय नागरिक थे। वे श्रीनाथ जी की सेवा में अत्यन्त चतुर और भक्तिरस के विचित्र रसिक थे। अष्टछाप के कवियों में वे बहुत प्रभावशाली थे। सूरदास जी जैसे महान कवि उनका पर्याप्त सम्मान करते थे। उन्होंने राधा-कृष्ण के अभिराम यश-गायन से अपनी पवित्र वाणी को सौभाग्यशाली और अमर बना लिया। व्रजरज में उनकी विशेष रति थी। श्रीनाथ जी के साज-शृंगार के वे व्यवस्थापक थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य उनका बहुत विश्वास करते थे और गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी ने उनकी प्रतिष्ठा में कभी कमी नहीं आने दी।गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी ने स्वयं अपने श्रीमुख से उनकी प्रशंसा की थी कि उन्होंने अपने अधिकार का उचित उपयोग किया, श्रीनाथ जी का कीर्तन किया और महाप्रभु के सेवक होकर ऐसी सेवा की जैसी किसी अन्य से नहीं हो सकी।जब श्री कृष्णदास जी गोवर्धन पर अपने आराध्य थीनाथ जी को कीर्तन-सेवा से रिझा रहे थे, उस समय भारत के सम्राट अकबर की तूती पूरे देश में बोल रही थी। अकबर की उदार नीतियों से जनता को राजकीय सुव्यवस्था और धार्मिक स्वतन्त्रता का अनुभव हो रहा था। ऐसी शान्तिपूर्ण स्थिति में श्री कृष्णदास जी ने अपनी सारी व्यवस्था-बुद्धि श्रीनाथ जी की सेवा में लगा दी और पृथ्वी पर दिव्यता का साम्राज्य उतार दिया। यही उनकी मौलिकता थी।

जन्म और प्रारम्भिक जीवन

श्री कृष्णदास जी का जन्म सम्वत् 1553 में गुजरात के अहमदाबाद जनपद के चणोतर नामक गाँव में एक कुनबी कायस्थ कुल में हुआ था। उनके पिता गाँव के प्रमुख थे। लोगों में उनका बहुत प्रभाव था। घर में खाने-पीने की किसी वस्तु की कमी नहीं थी। कृष्णदास जी का पालन-पोषण उत्तम ढंग से हुआ। शिक्षा-दीक्षा की भी अच्छी व्यवस्था थी। मात्र पाँच वर्ष की आयु से ही वे भगवान की कथा-कीर्तन में सम्मिलित होने लगे थे। उनका शरीर बहुत सुन्दर था, मन भावुक और कोमल था। धीरे-धीरे सद्गुणों का विकास हो रहा था।पिता धन के लोभी थे। वे चाहते थे कि कृष्णदास पढ़-लिखकर धन कमाएँ और घर-गृहस्थी संभालें। वे कभी नहीं चाहते थे कि पुत्र साधु बनकर घर छोड़ दे। लेकिन कृष्णदास जी को पिता की धन-लोलुपता से बहुत चिढ़ थी। घर का सारा साज-सामान और भोग-विलास उनका मन अपनी ओर नहीं खींच सका। उनका वैराग्य बढ़ता गया। परिवार में तनिक भी आसक्ति नहीं रह गई।

घर-त्याग की दिव्य घटना

एक दिन विचित्र घटना घटी। कृष्णदास जी केवल बारह वर्ष के थे। गाँव में एक वणजारा आया। उसने माल बेचकर बहुत सारा रुपया जमा किया। सूर्यास्त होने से वह गाँव छोड़कर डेरे पर नहीं जा सका। कृष्णदास जी के पिता ने रात में उसके रुपयों को लुटवा लिया और अपने पास रख लिया।

वणजारा बेचारा कहीं का नहीं रहा। कृष्णदास जी ने पिता को बहुत समझाया कि रुपए लौटा दें, लेकिन पिता नहीं माने। तब कृष्णदास जी स्वयं वणजारे के पास गए। उन्होंने आश्वासन दिया कि न्यायालय में पिता के विरुद्ध गवाही देंगे। वणजारा उनके निष्कपट व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ। न्यायालय में गवाही देकर कृष्णदास जी ने वणजारे को उसके सारे रुपए दिलवा दिए। पिता बहुत अप्रसन्न हुए और कृष्णदास जी को घर से निकाल दिया।

पिता ने कहा - तुम पिछले जन्म में फकीर थे, इस जन्म में तुमने मुझे भी फकीर बना दिया। दूर चले जाओ, न मैं तुम्हारा मुख देखूँगा, न मन में दुख होगा। कृष्णदास जी को इस आज्ञा से बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्हें लगा कि भगवान की बड़ी कृपा है कि वे पापपूर्ण वातावरण से बाहर निकल आए। वे परम धन भगवान की खोज में घर से बाहर निकल पड़े। कोमल अवस्था में घर छोड़ने की इस घटना से लोग बहुत दुखी हुए, लेकिन कृष्णदास जी के लिए यही सबसे उत्तम था। वे तीर्थयात्रा के लिए चल पड़े।

महाप्रभु से मिलन और ब्रह्मसम्बन्ध

पुष्टिमार्ग के संस्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य अडेल से व्रज जा रहे थे। कुछ दिन पहले ही उन्होंने सूरदास जी को गऊघाट पर दीक्षित किया था। विश्राम घाट पर महाप्रभु ने कृष्णदास जी को देखा। सुन्दर शरीर और कोमल चित्त वाले इस बालक के घर त्याग की बात पर विचार किया। महाप्रभु ने उन्हें ब्रह्मसम्बन्ध दिया। ब्रह्मसम्बन्ध लेते ही श्री कृष्णदास जी को भगवल्लीलाओं का ज्ञान हो गया। वे आचार्य के चरणों में गिर पड़े। सदा के लिए शरणागत होकर श्रीकृष्ण रूपी परम धन की खोज में महाप्रभु के साथ गोवर्धन आ गए। महाप्रभु ने उन्हें श्रीनाथ जी मन्दिर का अधिकारी नियुक्त किया।

श्रीनाथ जी की सेवा और कीर्तन

वे शयन-समय के प्रमुख कीर्तनकार थे। गोपीलिला, अनुराग, निकुंज आदि के पद रचकर श्रीनाथ जी को समर्पित करते थे। अष्टछाप के समस्त कवि और वृन्दावन के बड़े रसिक महात्मा उन्हें मन्दिर के अधिकारी होने के कारण बहुत सम्मान देते थे।

उत्तराधिकार संकट और गोस्वामी जी के प्रति निष्ठा

महाप्रभु के गोलोक-प्रवेश के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ जी उत्तराधिकारी हुए। उनके देहांत के बाद उत्तराधिकार का प्रश्न बड़ा महत्वपूर्ण हो गया। गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी के विरुद्ध गोपीनाथ जी की पत्नी ने अल्पवयस्क पुरुषोत्तम जी का पक्ष लिया। कृष्णदास जी भी पुरुषोत्तम जी की ओर हो गए। स्थिति इतनी बढ़ गई कि कृष्णदास जी ने गोस्वामी जी के लिए श्रीनाथ जी का दीपक-दर्शन तक बंद कर दिया। गोस्वामी जी परामोली चले गए और वहीं से ध्वजा-दर्शन करते रहे।

वीरबल गोस्वामी जी के भक्त थे। उनके संकेत पर आगरा के शासक ने कृष्णदास जी को कारागार में डाल दिया। गोस्वामी जी इस घटना से बहुत दुखी हुए। उन्होंने व्रत लिया कि जब तक कृष्णदास जी मुक्त नहीं होंगे, तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। कृष्णदास जी उनकी कृपा से मुक्त हो गए। गोस्वामी जी की सहानुभूति से वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने गोस्वामी जी को वास्तविक उत्तराधिकारी घोषित किया। उनकी श्रद्धा बहुत बढ़ गई। उन्होंने एक पद में भावपूर्ण वन्दना की है -

"जय जय श्रीवल्लभनन्दन, सुरनर मुनि जाकी पदरजवन्दन, मायावाद किये जु निकन्दन ।
नाम लिये काटत भवफन्दन प्रकट पुरुषोत्तम चरचितचन्दन, 'कृष्णदास' गावत श्रुति छन्दन ।"

भक्ति-भाव और रचनाएँ

रसिक कृष्णदास जी की कविता भगवान के वात्सल्य-सागर में स्नान कर युगल-स्वरूप की भक्ति से शृंगारित होकर पुष्टिसिद्धान्त के कल्प-तरू के नीचे समाधिस्थ होकर अमर हो गई। वे निकुंज-लीला-रस के पारखी थे। राधा-कृष्ण के रूप-सौन्दर्य और दिव्य-केलि के कवि थे। वे राधा-कृष्ण के अन्तरंग सखा थे। उनमें वात्सल्य, दास्य, सख्य और मधुर भक्ति का सरस समन्वय था। उनका जीवन हर दृष्टि से अलौकिक था। उनका ब्रह्मचर्य अखण्ड था, भगवद्भक्ति निष्कलंक थी और गुरु-निष्ठा मर्यादित थी। उन्होंने शृंगार-भाव के अनेक पद लिखे। उनकी विशिष्ट रचना 'युगल मान-चरित्र' है। अष्टछाप के कवियों में उनकी गणना होती है।

समाधि और अमर व्यक्तित्व

सम्वत् 1636 के लगभग उन्होंने भगवान के लीलाधाम में प्रवेश किया। वे एक कूप का निर्माण करा रहे थे। निरीक्षण करते समय उसमें गिर पड़े। गोस्वामी जी ने कूप पूरा करवाकर उनकी आत्मा को शान्ति दी। सन्त कृष्णदास जी का व्यक्तित्व महान था। वे प्रभावशाली सेवक, परम भक्त और उच्च कोटि के सन्त थे। उनकी सेवा और भक्ति पुष्टिमार्ग में सदा प्रेरणा देती रहेगी।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

तेल की कीमतों पर सियासी संग्राम

क्या 9 अप्रैल के बाद बढ़ेंगे पेट्रोल-डीजल के दाम?

कांग्रेस का बड़ा आरोप, सरकार का साफ इनकार, वैश्विक तनाव के बीच आम आदमी की बढ़ी चिंता

कांग्रेस पार्टी ने हाल ही में एक बड़ा आरोप लगाया है कि 9 अप्रैल के बाद पेट्रोल और डीजल के दाम जरूर बढ़ेंगे। उनके नेता पवन खेड़ा ने सोशल मीडिया पर लिखा कि चुनाव खत्म होने के बाद देखिए दाम कैसे बढ़ते हैं। उन्होंने कहा कि अभी सरकार दाम नहीं बढ़ा रही लेकिन बाद में बढ़ा देगी। यह आरोप इसलिए लगाया गया क्योंकि मध्य पूर्व में तनाव बढ़ गया है। अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष से कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर चली गई है। कांग्रेस ने प्रीमियम पेट्रोल के 2 रुपये महंगे होने और इंडस्ट्रियल डीजल के 22 रुपये बढ़ने पर भी सरकार को घेरा। उन्होंने इसे महंगाई मैन का एक और झटका बताया। आम लोग सोच रहे हैं कि क्या यह सही है या सिर्फ राजनीतिक बात है। कांग्रेस का कहना है कि सरकार आम आदमी की जेब पर बोझ डाल रही है। लेकिन कई लोग पूछ रहे हैं कि क्या 9 अप्रैल कोई खास तारीख है जहां चुनाव या कोई घटना के बाद दाम बढ़ सकते हैं। यह आरोप ऐसे समय आया जब देश में मध्य पूर्व का संकट चर्चा में है। कच्चा तेल महंगा होने से तेल कंपनियों पर दबाव है लेकिन कांग्रेस कह रही है कि सरकार अभी इंतजार कर रही है। इस दावे ने सोशल मीडिया पर बहस शुरू कर दी है। लोग डर रहे हैं कि अगर दाम बढ़े तो रोजमर्रा का खर्च बढ़ जाएगा। कांग्रेस का यह बयान विपक्ष की आवाज है जो सरकार से जवाब मांग रही है। लेकिन अभी कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। यह आरोप दिखाता है कि राजनीति में ईंधन के दाम हमेशा एक बड़ा मुद्दा रहते हैं। आम आदमी इस बहस को ध्यान से देख रहा है क्योंकि उसकी जिंदगी इससे जुड़ी है।

सरकारी पक्ष और तथ्य क्या कहते हैं?

इस दावे में कितनी सच्चाई है यह जानना जरूरी है। सरकार के सूत्रों ने साफ कहा है कि सामान्य पेट्रोल और डीजल के दाम नहीं बढ़ेंगे। उन्होंने कई बार दोहराया कि अभी कोई योजना नहीं है। सिर्फ प्रीमियम पेट्रोल में 2 से 2.35 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई है जो 20 मार्च 2026 से लागू है। इसी तरह इंडस्ट्रियल डीजल यानी बड़े उद्योगों वाला डीजल 22 रुपये महंगा हुआ है। लेकिन आम लोगों का इस्तेमाल वाला नॉर्मल पेट्रोल और डीजल बिल्कुल वही दाम पर है। दिल्ली में नॉर्मल पेट्रोल अभी भी करीब 94 रुपये के आसपास है। सरकार कहती है कि कच्चा तेल अगर 130 डॉलर तक न पहुंचे तो दाम नहीं बढ़ेंगे। भारत के पास पर्याप्त स्टॉक है और तेल कंपनियां अपने मुनाफे से थोड़ा नुकसान सह सकती हैं। मध्य पूर्व का तनाव है लेकिन भारत ने आयात के नए रास्ते बना लिए हैं। कई समाचारों में लिखा है कि पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर रखने का फैसला लिया गया है। कांग्रेस का आरोप राजनीतिक लगता है क्योंकि कोई आधिकारिक पेपर या घोषणा नहीं है कि 9 अप्रैल के बाद दाम बढ़ेंगे। सरकार का कहना है कि अफवाहें फैल रही हैं लेकिन हम सतर्क हैं। अगर कच्चा तेल बहुत ज्यादा बढ़ गया तो हो सकता है लेकिन अभी नहीं। यह तथ्य दिखाते हैं कि दावा ज्यादा डराने वाला है। आम लोग राहत की सांस ले सकते हैं क्योंकि अभी दाम नहीं बढ़ रहे। लेकिन वैश्विक हालात पर नजर रखनी होगी। इस तरह सरकार और विपक्ष की बातों से पता चलता है कि सच्चाई बीच में है। कांग्रेस घेर रही है लेकिन सरकार ने जवाब दे दिया है कि आम आदमी सुरक्षित है।

दाम एक सीमा से ज्यादा बढ़ने पर आम लोगों की जिंदगी पर क्या असर?

अगर पेट्रोल और डीजल के दाम एक सीमा से ज्यादा बढ़ गए तो आम लोगों की जिंदगी पर बड़ा असर पड़ेगा। सबसे पहले ट्रांसपोर्ट महंगा हो जाएगा। बस और ऑटो के किराए बढ़ेंगे जिससे ऑफिस जाने वाले लोग और छात्र ज्यादा खर्च करेंगे। गांव से शहर आने वाले मजदूरों का रोज का खर्च बढ़ जाएगा। सामान की ढुलाई महंगी होने से सब्जी दूध और फल के दाम भी ऊपर चढ़ेंगे। बाजार में हर चीज महंगी लगेगी। किसान ट्रैक्टर चलाने और पानी पंप करने के लिए डीजल ज्यादा महंगा खरीदेंगे तो फसल की कीमत बढ़ेगी और खाने का खर्च घरों में बढ़ेगा। छोटे व्यापारी और दुकानदार भी माल लाने में ज्यादा पैसा लगाएंगे। गरीब परिवार जो पहले से तंग हैं उनका बजट और बिगड़ जाएगा। महंगाई बढ़ने से सारी चीजें महंगी हो जाएंगी। उदाहरण के लिए अगर डीजल 10 रुपये महंगा हुआ तो ट्रक का किराया बढ़ेगा और किराने की दुकान पर चावल दाल भी महंगे हो सकते हैं। शहरों में लोग अपनी गाड़ी कम इस्तेमाल करेंगे लेकिन बस वाले भी दाम बढ़ा देंगे। महिलाएं घर का बजट संभालने में मुश्किल महसूस करेंगी। बच्चों की पढ़ाई और दवाइयों पर भी असर पड़ सकता है। लेकिन अगर सरकार सब्सिडी दे या टैक्स कम करे तो असर कम हो सकता है। कई परिवार पहले से ही महंगाई से जूझ रहे हैं। यह स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि ईंधन कितना जरूरी है हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में। अगर दाम संतुलित रहे तो आम आदमी को राहत मिलेगी वरना जीवन और कठिन हो जाएगा। कुल मिलाकर यह असर हर वर्ग पर पड़ेगा लेकिन गरीब सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

असंतुलित दाम बढ़ोतरी का संकट कब आया?

इतिहास में जब ईंधन के दाम असंतुलित तरीके से बढ़े तो कई संकट सामने आए। एक बड़ा उदाहरण है साल 2012 का। उस समय यूपीए सरकार ने पेट्रोल के दाम अचानक 8 रुपये प्रति लीटर बढ़ा दिए। इससे पूरे देश में विरोध प्रदर्शन हुए। लोग सड़कों पर उतर आए और कई जगह बंद हुए। महंगाई बहुत बढ़ गई और आम आदमी की जिंदगी मुश्किल हो गई। ट्रांसपोर्ट महंगा होने से सब्जी और दाल के दाम चढ़ गए। सरकार पर बहुत दबाव पड़ा। इसी तरह 1973 के वैश्विक तेल संकट में कच्चे तेल की कीमत कई गुना बढ़ गई। दुनिया भर में ईंधन की कमी हो गई और आर्थिक मंदी आ गई। भारत में भी उस समय कारखाने बंद होने लगे और लोगों को पेट्रोल के लिए लंबी लाइनें लगानी पड़ीं। 2008 में भी जब कच्चा तेल 147 डॉलर तक पहुंचा तो भारत में महंगाई बढ़ी और रुपया कमजोर हुआ। 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध से कच्चा तेल महंगा हुआ लेकिन भारत ने दाम नहीं बढ़ाए फिर भी कुछ असर पड़ा जैसे खाने के दाम थोड़े ऊपर गए। इन उदाहरणों से पता चलता है कि असंतुलित बढ़ोतरी से केवल दाम ही नहीं बढ़ते बल्कि पूरा अर्थव्यवस्था प्रभावित होता है। बेरोजगारी बढ़ सकती है और सरकार को सब्सिडी ज्यादा देनी पड़ती है। लोग विरोध करते हैं और राजनीति गरम हो जाती है। इतिहास सिखाता है कि सरकार को सतर्क रहना चाहिए ताकि आम आदमी न परेशान हो। अगर दाम अचानक बहुत बढ़े तो संकट आता है जैसे पहले आया था। ये सबक हमें याद दिलाते हैं कि ईंधन की कीमतें संभालकर रखनी चाहिए।

अब सावधानी क्यों जरूरी?

कुल मिलाकर कांग्रेस का दावा राजनीतिक लगता है लेकिन वैश्विक हालात को देखते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। सरकार अभी दाम स्थिर रख रही है जो आम आदमी के लिए अच्छी खबर है। तेल कंपनियां और सूत्र कहते हैं कि स्टॉक काफी है और जरूरत पड़ने पर टैक्स कम किया जा सकता है। लेकिन अगर मध्य पूर्व का तनाव लंबा चला तो दाम बढ़ सकते हैं। आम लोग अफवाहों पर ध्यान न दें और पेट्रोल बेकार न भरें। सरकार को चाहिए कि सब्सिडी और मदद जारी रखे ताकि गरीब प्रभावित न हों। यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि ऊर्जा सुरक्षा कितनी जरूरी है। सौर ऊर्जा और इलेक्ट्रिक गाड़ियां बढ़ाने से भविष्य में ऐसे संकट कम हो सकते हैं। कांग्रेस और सरकार दोनों की बातों से पता चलता है कि ईंधन एक संवेदनशील मुद्दा है। अगर दाम बढ़े तो ट्रांसपोर्ट और खाने का खर्च नियंत्रित रखना होगा। लोग भी बचत करें जैसे कम गाड़ी चलाना या सार्वजनिक परिवहन इस्तेमाल करना। यह सब मिलकर दिखाता है कि संतुलित तरीके से समस्या हल की जा सकती है। इतिहास और वर्तमान दोनों से सीख लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं। आम आदमी की जिंदगी को आसान रखना सबसे महत्वपूर्ण है। सरकार की कोशिशें सराहनीय हैं लेकिन विपक्ष की नजर भी जरूरी है। इस तरह एक सोचपूर्ण नजरिया अपनाकर हम महंगाई के असर को कम कर सकते हैं।

माँ दुर्गा और आत्मशक्ति का विज्ञान

ब्रह्मस्वरूपिणी ऋतू खुशबू जी का दृष्टिकोण

@ भारतश्री ब्यूरो

चैत्र नवरात्रि का पावन पर्व सनातन धर्म संस्कृति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, महिमामय और कल्याणकारी माना गया है। यह केवल देवी-उपासना का पर्व ही नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण, अन्तःकरण-शुद्धि, जीवन-संतुलन, शक्ति-संचय और साधना-समन्वय का दिव्य अवसर है। आध्यात्मिक और वैज्ञानिक; दोनों ही दृष्टियों से नवरात्रि का यह काल अत्यन्त महनीय है, क्योंकि यह मनुष्य को बाह्य और आन्तरिक, दोनों स्तरों पर परिष्कृत, सशक्त और संतुलित करने की अद्भुत क्षमता रखता है।नवरात्रि का समय उस दिव्य साधना का काल है, जब साधक देवी भगवती की आराधना के माध्यम से अपने भीतर निहित आत्मिक शक्ति, मानसिक शान्ति और शारीरिक सामर्थ्य को जागृत करने का प्रयास करता है। ऋतु-संधि के इस विशिष्ट काल में प्रकृति के साथ-साथ शरीर, मन और मस्तिष्क में भी अनेक सूक्ष्म परिवर्तन घटित होते हैं। भारतीय ऋषियों ने इस तथ्य को अत्यन्त सूक्ष्मता से समझा और इसीलिए इस समय उपवास, जप, ध्यान, स्वाध्याय, मौन, संयम, पूजन और साधना का विधान किया, जिससे व्यक्ति की रोग-प्रतिरोधक क्षमता सुदृढ़ हो, मन का परिष्कार हो, चित्त निर्मल बने और जीवन की दिशा पुनः दिव्यता की ओर उन्मुख हो सके।

देवी दुर्गा केवल एक देवीरूप में पूजित नहीं हैं। वे सम्पूर्ण सृष्टि में कार्यरत इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति की समष्टि हैं। वे ही इस विश्व की आधारभूत, प्रेरक, धारक और क्रियात्मक शक्ति हैं। माँ ललिता त्रिपुरसुन्दरी, माँ दुर्गा, आदिशक्ति, पराम्बा, महादेवी - इन सभी नामों में उसी एक चैतन्यमयी शक्ति का विविध रूपों में वन्दन किया गया है। उनकी उपासना साधक को केवल बाह्य अनुग्रह ही नहीं देती, बल्कि आत्मबल, धैर्य, विवेक, संतुलन, पवित्रता और आध्यात्मिक उन्नयन का भी वरदान प्रदान करती है।नवरात्रि के नौ दिवस वास्तव में नव-साधना के नौ सोपान हैं। इन दिनों में किया गया जप, तप, ध्यान, व्रत और आराधना व्यक्ति को भीतर से परिष्कृत करता है, उसकी सुप्त शक्तियों को जागृत करता है और उसे नकारात्मकता, दुर्बलता तथा विषाद से ऊपर उठाकर कल्याण, प्रकाश और आत्मविश्वास के मार्ग पर अग्रसर करता है। यह पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि जीवन के वास्तविक शत्रु बाहर नहीं, भीतर हैं; काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आलस्य, संशय, अविवेक और अहंकार ही वे राक्षसी वृत्तियाँ हैं, जिनका विनाश करना ही नवरात्रि की सच्ची साधना है। महिषासुर-वध की कथा इसी शाश्वत सत्य की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है कि जब अंतःकरण में दैवीशक्ति का जागरण होता है, तब आसुरी प्रवृत्तियाँ स्वतः पराजित होने लगती हैं।नवरात्रि का गूढ़ संदेश यह है कि मानव-मन में स्थित दुष्प्रवृत्तियों का निर्मूलन केवल बाह्य प्रयासों से नहीं, बल्कि निर्मल बुद्धि, सत्संकल्प, आत्मशक्ति और देवी-कृपा के संयुक्त जागरण से सम्भव होता है। अंतःकरण की पूर्ण शुद्धि के उपरान्त जो शुभता, मंगलता, करुणा, सौम्यता, संयम और दिव्यता प्रस्फुटित होती है, वही शक्ति-आराधना की वास्तविक फलश्रुति है। जब मनुष्य अपने भीतर के अशुभ का परित्याग कर शुभ का वरण करता है, तभी नवरात्रि का पर्व उसके जीवन में सार्थक सिद्ध होता है।

देवी माँ दुर्गा के प्रत्येक स्वरूप में जीवनोपयोगी एक दिव्य शिक्षा निहित है। शैलपुत्री स्थिरता और जीवनाधार की प्रेरणा देती हैं। ब्रह्मचारिणी तप, अनुशासन और साधना की प्रतिमूर्ति हैं।चन्द्रघण्टा साहस और सजगता का बोध कराती हैं। कूष्माण्डा सृजन और प्रकाश की अधिष्ठात्री हैं। स्कन्दमाता मातृवत् करुणा और संरक्षण का सन्देश देती हैं। कात्यायनी धर्म-संरक्षण की तेजस्विनी शक्ति हैं। कालरात्रि भय और अज्ञान का नाश करती हैं। महागौरी शुद्धि, पवित्रता और कल्याण की प्रतीक हैं। सिद्धिदात्री पूर्णता, कृपा और आध्यात्मिक सिद्धि का वरदान प्रदान करती हैं। इन नव रूपों का दर्शन वस्तुतः साधक के भीतर की साधना-यात्रा का ही प्रतीक है। स्थिरता से तप तक, तप से साहस तक, साहस से प्रकाश तक और प्रकाश से पूर्णता तक। शाक्त परम्परा के अनुसार आदिशक्ति मूल रूप में निर्गुण, अनन्त और परम तत्त्व की वह महाशक्ति हैं, जिनसे समस्त सृष्टि का आविर्भाव, पालन और लय सम्पन्न होता है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश जिन कार्यों का संचालन करते हैं, उन सभी के पीछे जो मौलिक शक्ति कार्य करती है, वही पराशक्ति है। इसीलिए कहा गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति, संरक्षण और संहार तीनों व्यवस्थाएँ जिस महाशक्ति के अधीन सम्पादित होती हैं, वही परम्बा भगवती हैं। वे ही जगज्जननी हैं, वे ही विश्वधारिणी हैं, वे ही चेतना का मूल स्पन्दन हैं। नवरात्रि का महात्म्य इस कारण भी सर्वोपरि है कि इसी पवित्र काल में देवताओं ने दैत्यों से पीड़ित होकर आद्या शक्ति का आह्वान किया और उनकी करुण पुकार सुनकर देवी का प्राकट्य हुआ। माँ ने दैत्यों का विनाश कर धर्म की पुनः प्रतिष्ठा की। अतः नवरात्रि केवल उत्सव नहीं, यह धर्म की अधर्म पर, प्रकाश की अंधकार पर, चेतना की जड़ता पर और शुभ की अशुभ पर विजय का

अनन्त प्रतीक है। महिषासुर पर देवी दुर्गा की विजय यह उद्घोष करती है कि जब-जब जीवन में नकारात्मकता प्रबल होगी, तब-तब जागृत शक्ति ही संतुलन और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगी।

यह पर्व शरीर, मन और बुद्धि की शुद्धि का भी अनुपम अवसर है। वर्षभर के श्रम, तनाव, व्यस्तता, असंतुलन और मानसिक बोझ से थका हुआ व्यक्ति इन नौ दिनों में स्वयं को पुनः संयमित, परिशोधित और पुनर्संतुलित कर सकता है। सात्त्विक आहार, शुद्ध विचार, मर्यादित व्यवहार, मंत्रजप, मौन, ध्यान और पूजा; ये सब मिलकर व्यक्ति के भीतर सत्त्व की वृद्धि करते हैं। जब सत्त्व बढ़ता है, तब विवेक जागता है; जब विवेक जागता है, तब जीवन का मार्ग अधिक निर्मल, अधिक संयत और अधिक आलोकित हो जाता है।

नवरात्रि का यह काल मंत्रोपासना की दृष्टि से भी अत्यन्त सामर्थ्यवान माना गया है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सूक्ष्म तरंगों से व्याप्त है। मंत्रों के उच्चारण, जप और ध्यान के द्वारा साधक उन शुभ और सशक्त तरंगों से जुड़ता है, जो उसके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, मानसिक स्थिरता, आत्मिक बल और आध्यात्मिक उन्नति का संचार करती हैं। यह मान्यता केवल श्रद्धा का विषय नहीं, बल्कि ध्वनि, कम्पन और मनोशक्ति के सूक्ष्म विज्ञान से भी जुड़ी हुई है। इस प्रकार नवरात्रि आध्यात्मिक साधना और सूक्ष्म ऊर्जाओं के संतुलन का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। नवरात्रि मातृशक्ति की उपासना का पर्व है; अतः यह नारी-मर्यादा, नारी-गौरव और नारी-सम्भावना का भी महापर्व है। यह हमें स्मरण कराता है कि नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि सृष्टि की जननी, संस्कृति की संवाहिका, करुणा की मूर्ति और शक्ति की आधारशिला है। राम, कृष्ण, ऋषि, मुनि, महापुरुष, वीर और वीरांगनाएँ सभी किसी न किसी मातृशक्ति की गोद में ही संस्कार पाकर महान बने। अतः नवरात्रि केवल देवी-मूर्ति की पूजा नहीं, बल्कि जीवन में नारी के प्रति सम्मान, संवेदना, श्रद्धा और संरक्षण का भी संस्कार है।

वास्तव में नवरात्रि का उत्सव हमें यह सिखाता है कि जीवन को पवित्र बनाना ही सबसे बड़ी पूजा है। दुर्बलताओं से ऊपर उठना, दुर्गुणों का परित्याग करना, सदाचार को अपनाना, मन को संयमित रखना, विचारों को ऊर्ध्वगामी बनाना, आत्मा को साधना से प्रकाशित करना और समाज में प्रेम, सद्भाव, करुणा और शुचिता का वातावरण निर्मित करना यही नवरात्रि की सच्ची उपासना है। केवल दीप, धूप, नैवेद्य और अनुष्ठान से ही देवी प्रसन्न नहीं होतीं; वे तो तब प्रसन्न होती हैं, जब मनुष्य के भीतर विवेक, विनय, शील, श्रद्धा, साहस और सेवा का जागरण होता है।

अतः यह पावन नवरात्रि हम सबके लिए आत्मशुद्धि, चित्त-प्रसाद, संकल्प-शक्ति, सदाचार, साधना, मातृशक्ति-सम्मान और दिव्य जीवन-दृष्टि का प्रेरक पर्व बने; इसी में इसका वास्तविक मंगल निहित है। माँ भगवती से प्रार्थना है कि वे समस्त प्राणियों के जीवन में शान्ति, शक्ति, सद्बुद्धि, आरोग्य, समृद्धि और कल्याण का प्रकाश भरें। हमारे भीतर से समस्त भय, भ्रम, अवसाद, अशुद्धि और दुर्बलता का नाश करें तथा अंतःकरण में शुभता, पवित्रता, साहस, विवेक और दिव्यता का स्थायी जागरण करें। माँ दुर्गा की कृपा से यह चैत्र नवरात्रि सभी के लिए मंगलमय, कल्याणमय और सिद्धिदायिनी हो।

देशभर में शहीद दिवस पर वीरों को नमन

नेताओं से कलाकारों तक श्रद्धांजलि

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की याद में भावुक हुआ देश, नई पीढ़ी को उनके आदर्शों से जोड़ने की अपील

@ अर्पित शुक्ल

भारत की आजादी की कहानी सिर्फ तारीखों और घटनाओं की नहीं, बल्कि उन वीर सपूतों के अदम्य साहस और बलिदान की है, जिन्होंने हंसते-हंसते देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। हर साल 23 मार्च को मनाया जाने वाला शहीद दिवस इसी अमर बलिदान की याद दिलाता है। यह दिन खास तौर पर भगत सिंह , राजगुरु और सुखदेव की शहादत को नमन करने का दिन है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे को भी मुस्कुराकर स्वीकार किया।

आज भी इन महान क्रांतिकारियों का साहस और देशभक्ति हर भारतीय के दिल में जिंदा है। उनकी कहानियां केवल इतिहास की किताबों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आज भी युवाओं को प्रेरित करती हैं कि देश के लिए कुछ करने का जज्बा क्या होता है।

देशभर में श्रद्धांजलि, भावुक हुए लोग

शहीद दिवस के अवसर पर पूरे देश में भावनाओं का माहौल देखने को मिला। आम नागरिकों से लेकर बड़ी हस्तियों तक, हर किसी ने अपने-अपने तरीके से शहीदों को याद किया।प्रधानमंत्री मोदी ने भी इस मौके पर वीर सपूतों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि देश के लिए उनका बलिदान हमारी सामूहिक स्मृति में हमेशा के लिए अंकित रहेगा। उन्होंने कहा कि ऐसे महान लोगों की वजह से ही आज भारत आजाद और मजबूत है।

कलाकारों और खिलाड़ियों ने भी किया नमन

इस खास दिन पर फिल्म और खेल जगत की हस्तियों ने भी अपने भाव व्यक्त किए। अभिनेता जैकी श्रॉफ ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा कर लिखा कि आज हम जो आजादी महसूस कर रहे हैं, वह इन शहीदों की कुर्बानी का परिणाम है।कवि और गीतकार मनोज मुन्तशिर ने अपनी पंक्तियों के माध्यम से तिरंगे और शहीदों के सम्मान को याद किया। उनकी पंक्तियों में देशभक्ति की गहरी भावना झलकती है, जो सीधे दिल को छूती है।वहीं, पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने भी शहीदों को नमन करते हुए कहा कि उनका बलिदान हमेशा हमें प्रेरित करता रहेगा। उन्होंने अपने संदेश में देश के वीरों को कोटि-कोटि प्रणाम किया।

जब फांसी ने जगाई आजादी की लौ

23 मार्च 1931 का दिन भारतीय इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज है। इसी दिन अंग्रेजी हुकूमत ने भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी थी। कहा जाता है कि उन्हें तय समय से पहले ही सजा दी गई, ताकि लोगों में बढ़ रही क्रांति की भावना को दबाया जा सके।लेकिन हुआ इसका उल्टा। इन तीनों की शहादत ने पूरे देश में आजादी की लहर को और तेज कर दिया। हर कोने में उनके नाम की गूंज सुनाई देने लगी और अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनआंदोलन और मजबूत हो गया।

ऐतिहासिक स्थल पर नई पहल

इस अवसर पर कई स्थानों पर कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। पार्लियामेंट स्ट्रीट स्थित आरसीएस कार्यालय में भगत सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया गया और ऐतिहासिक कोर्ट ट्रायल रूम का लोकार्पण हुआ।इस कार्यक्रम में रेखा गुप्ता ने शहीद-ए-आजम के साहस और बलिदान को याद करते हुए कहा कि यह स्थान देश के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है।

यादों में जिंदा शहादत

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह वही स्थान है, जहां भगत सिंह के मुकदमे की सुनवाई हुई थी। यह कोर्ट ट्रायल रूम केवल एक इमारत नहीं, बल्कि उस दौर के संघर्ष, साहस और देशभक्ति का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि ऐसे ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण बहुत जरूरी है, क्योंकि ये नई पीढ़ी को अपने इतिहास से जोड़ने का काम करते हैं। जब युवा इन जगहों को देखेंगे, तो उन्हें समझ आएगा कि आजादी कितनी बड़ी कीमत चुकाकर मिली है।

नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत

कार्यक्रम के दौरान यह भी कहा गया कि भगत सिंह की प्रतिमा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी। उनके विचार और आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे।देशभक्ति, साहस और बलिदान जैसे मूल्यों को अपनाने की जरूरत आज भी उतनी ही है। शहीदों की कहानियां हमें यह सिखाती हैं कि अगर इरादे मजबूत हों, तो असंभव भी संभव हो सकता है।शहीद दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक भावना है-उस भावना की, जो हमें अपने देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा देती है।आज हम जिस आजादी का आनंद ले रहे हैं, वह इन वीरों की कुर्बानी का परिणाम है। ऐसे में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनके आदर्शों को याद रखें और उन्हें अपने जीवन में उतारें।

इंकलाब के नारों से गूंजा आसमान

देर रात तक चला ऐतिहासिक कवि सम्मेलन

@ अर्पित शुक्ल

श्रीमती लता देवी वात्सल्य एवं जन सेवा सहयोग समिति के तत्वाधान में 23 मार्च को शहीद-ए-आज़म भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव के शहादत दिवस पर तियरा कलां, सोनभद्र में आयोजित कार्यक्रम ने पूरे क्षेत्र को क्रांतिकारी ऊर्जा से सराबोर कर दिया। 40वें वर्ष में आयोजित इस समारोह में देशभक्ति, सामाजिक चेतना और जनसंघर्ष की गूंज स्पष्ट सुनाई दी।कार्यक्रम का शुभारंभ आयोजक अरुण पांडे के नेतृत्व में शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण के साथ हुआ। इंकलाब ज़िंदाबाद, और भारत माता की जय के गगनभेदी नारों से पूरा क्षेत्र देर तक गूंजता रहा। इसके पश्चात नर्वदेश्वर स्मृति पुरस्कार का वितरण किया गया, जहां उपस्थित जनसमूह ने स्वर्गीय नर्वदेश्वर देव पांडेय के योगदान और स्मृतियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इसके बाद शुरू हुआ वह ऐतिहासिक कवि सम्मेलन, जिसने रात को विचारों की क्रांति में बदल दिया। मंच पर आए कवियों ने अपनी ओजस्वी, मार्मिक और जनपक्षधर रचनाओं से न केवल मनोरंजन किया, बल्कि समाज और व्यवस्था पर तीखे सवाल भी खड़े किए।कवयित्री कौशल्या चौहान ने अपनी ओजपूर्ण पंक्तियों-तीर हूँ, तलवार हूँ, अंगार हूँ,भारत की मिट्टी से करती प्यार हूँ।से श्रोताओं के भीतर देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।जौनपुर से पधारीं सारिका श्रीवास्तव ने जीवन की विडंबनाओं को स्वर देते हुए कहा-सांस लेना दूभर, ज़िंदगी ज़हर लगती है,जिसने श्रोताओं को गहराई तक झकझोर दिया।डॉ. सीमा सिंह (मेडिकल ऑफिसर) ने राष्ट्र समर्पण की भावना को अभिव्यक्त करते हुए सुनाया-तन, मन, धन समर्पित वतन के लिए।कमलेश खांबे ने शहीदों के अदम्य साहस को याद करते हुए कहा-फांसी का फंदा चूमकर गाते थे वंदे मातरम।जिस पर पूरा पंडाल जोश से भर उठा। वीर रस के नवोदित कवि अर्पित शुक्ला ने मैं कलम की स्याही से तलवारों के वार लिखूंगा सुनाकर सभी रोंगटे खड़े कर दिए,,ओम प्रकाश त्रिपाठी ने व्यवस्था पर करारा प्रहार करते हुए सुनाया-हर दिल में त्याग तपस्या हो।

तुम सब कुछ बेच दो लेकिन हिंदुस्तान मत बेचो।इन पंक्तियों ने श्रोताओं में जबरदस्त उत्साह भर दिया और तालियों की गूंज देर तक थमती नहीं दिखीदिलीप सिंह ने अपनी सशक्त प्रस्तुति से महफिल लूट ली और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।शायर विवेक चतुर्वेदी ने अपनी शायरी,,दोस्ती है सबसे मगर यारी नहीं

से समकालीन रिश्तों की सच्चाई को बयां करते हुए श्रोताओं का दिल जीत लिया।कार्यक्रम का कुशल संचालन कर रहे अशोक तिवारी ने अपने ओजस्वी अंदाज में कहा। बूढ़ा शजर आंधियों की जद में आ गया सुनाया जिससे पूरा वातावरण वीर रस और क्रांतिकारी चेतना से भर उठा। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे शिवदास जी ने मातृभूमि के प्रति समर्पण से भरी रचना प्रस्तुत कर कार्यक्रम को ऊंचाई प्रदान की।कवि सम्मेलन के संयोजक कवि प्रद्युम्न त्रिपाठी ने भोजपुरी के ओजपूर्ण स्वर में कहा-फांसी लागल भले गले में, झुके न दिहले निशान।जिसने श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिए और पूरे माहौल को क्रांतिकारी जोश से भर दिया। कार्यक्रम के समापन पर आयोजक अरुण पांडे ने सभी अतिथियों, कवियों और उपस्थित जनसमूह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह आयोजन केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि शहीदों के सपनों के भारत,,सामाजिक न्याय, समानता और क्रांति,,,की दिशा में संकल्प का प्रतीक है।इस अवसर पर गुप्त काशी सेवा ट्रस्ट के मुखिया रवि चौबे, रालोद के जिला अध्यक्ष श्रीकांत त्रिपाठी, पूर्व ब्लॉक प्रमुख रमाकांत देव, सत्य प्रकाश सिंह, जगदीश शुक्ला, ओम प्रकाश, संतोष त्रिपाठी, शुभम त्रिपाठी, अनुज त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

बंगाल में चुनाव से पहले प्रशासनिक बदलावों पर घमासान

हाई कोर्ट में गरमागरम बहस, आयोग बोला निष्पक्ष चुनाव के लिए जरूरी कदम, राज्य ने उठाए कई सवाल

पश्चिम बंगाल में चुनावी माहौल के बीच प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों के बड़े पैमाने पर किए गए तबादलों को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। मामला अब अदालत तक पहुंच चुका है और इस पर सोमवार को कलकत्ता हाई कोर्ट में सुनवाई हुई। अदालत में जिस तरह से दोनों पक्षों ने अपने-अपने तर्क रखे, उससे साफ है कि यह मुद्दा आने वाले दिनों में और भी गर्म रहने वाला है।इस पूरे विवाद के केंद्र में चुनाव आयोग का वह फैसला है, जिसमें चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद बड़ी संख्या में अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया गया। आयोग का कहना है कि यह कदम पूरी तरह निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए उठाया गया है, जबकि राज्य सरकार इसे प्रशासनिक व्यवस्था में अनावश्यक दखल मान रही है।

चुनाव को निष्पक्ष तरीके से कराने की जिम्मेदारी

सुनवाई के दौरान अदालत में माहौल काफी गंभीर और बहस तेज रही। मुख्य न्यायाधीश सुजय पाल और न्यायमूर्ति पार्थसारथी सेन की खंडपीठ ने दोनों पक्षों की दलीलें ध्यान से सुनीं। अदालत ने फिलहाल मामले की अगली सुनवाई बुधवार को तय की है, जब इस पर और विस्तार से चर्चा होगी।चुनाव आयोग की ओर से पेश हुए वकील ने अदालत में साफ शब्दों में कहा कि एक संवैधानिक संस्था के रूप में आयोग के पास चुनाव को निष्पक्ष तरीके से कराने की जिम्मेदारी है और इसके लिए जरूरी कदम उठाने का अधिकार भी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आयोग अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं कर रहा, बल्कि हर निर्णय के पीछे ठोस कारण हैं।

पारदर्शिता बना पाएगा चुनाव आयोग?

आयोग का कहना है कि चुनाव केवल मतदान का दिन नहीं होता, बल्कि उससे पहले की पूरी प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। अगर कहीं यह आशंका हो कि कोई अधिकारी निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है, तो उसे हटाना जरूरी हो जाता है। आयोग ने यह भी बताया कि केवल बंगाल ही नहीं, बल्कि अन्य राज्यों में भी परिस्थितियों के अनुसार अधिकारियों के तबादले किए गए हैं।सुनवाई के दौरान आयोग ने अदालत को यह भी भरोसा दिलाया कि अन्य राज्यों से चुनाव ड्यूटी के लिए बुलाए गए अधिकारियों की सूची भी पेश की जा रही है, ताकि पारदर्शिता बनी रहे और किसी तरह का संदेह न रहे।

कल्याण बनर्जी हुए हमलावर

दूसरी ओर, राज्य सरकार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता और तृणमूल कांग्रेस के नेता कल्याण बनर्जी ने आयोग के फैसले पर कड़े सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद जिस तरह से रातोंरात 63 पुलिस अधिकारियों और 16 प्रशासनिक अधिकारियों को हटा दिया गया, वह कई सवाल खड़े करता है।बनर्जी ने अदालत में पूछा कि जिन अधिकारियों का सीधा संबंध चुनाव से नहीं है, उन्हें हटाने की क्या जरूरत थी। उन्होंने खास तौर पर मुख्य सचिव और पंचायत सचिव जैसे पदों का जिक्र करते हुए कहा कि इनकी भूमिका व्यापक प्रशासनिक होती है, न कि केवल चुनाव से जुड़ी।उन्होंने कोलकाता पुलिस आयुक्त सुप्रतिम सरकार का भी उदाहरण दिया, जिन्हें महज एक महीने पहले ही पदभार सौंपा गया था और अचानक उन्हें हटा दिया गया। बनर्जी ने सवाल उठाया कि इतने कम समय में किसी अधिकारी

की कार्यशैली का आकलन कैसे किया गया और किस आधार पर यह फैसला लिया गया।

क्यों हो रहे तबादले?

राज्य सरकार ने यह भी चिंता जताई कि इतने बड़े स्तर पर तबादलों से प्रशासनिक व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। अगर इस दौरान कोई आपात स्थिति या प्राकृतिक आपदा आ जाती है, तो नए और अनुभवहीन अधिकारियों के भरोसे व्यवस्था कैसे संभलेगी।मामले का एक और दिलचस्प पहलू जनहित याचिका को लेकर भी सामने आया। चुनाव आयोग ने याचिकाकर्ता की मंशा पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह याचिका एक ऐसे वकील द्वारा दायर की गई है, जो राज्य सरकार के पैनल में शामिल हैं। आयोग का तर्क था कि किसी सरकारी वकील द्वारा सरकार के पक्ष में जनहित याचिका दाखिल करना कानूनी रूप से सही नहीं है।इस पर भी अदालत में चर्चा हुई और यह सवाल उठा कि क्या याचिका वास्तव में जनहित में है या इसके पीछे कोई और उद्देश्य है। हालांकि इस मुद्दे पर अभी अंतिम राय नहीं बनी है और संभव है कि अगली सुनवाई में इस पर और बहस हो।राज्य के महाधिवक्ता किशोर दत्त ने भी आयोग की शक्तियों को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय पहले ही कुछ मामलों में आयोग के अधिकारों की सीमा तय कर चुका है। ऐसे में यह देखना जरूरी है कि क्या आयोग उन अधिकारियों को भी हटा सकता है, जिनका चुनाव प्रक्रिया से सीधा संबंध नहीं है।

अदालत आयोग के फैसलों को किस हद तक सही मानती है?

उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासनिक ढांचे में इस तरह का बड़ा बदलाव केवल आशंका के आधार पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए ठोस और स्पष्ट कारण होने चाहिए, जो अब तक सामने नहीं आए हैं।सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलों को गंभीरता से लिया, लेकिन कोई तत्काल फैसला देने के बजाय मामले को बुधवार तक के लिए स्थगित कर दिया। अब सबकी नजर अगली सुनवाई पर टिकी है, जहां इस पूरे विवाद की दिशा तय हो सकती है।इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि चुनाव के दौरान प्रशासनिक स्वतंत्रता और चुनाव आयोग की शक्तियों के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। एक ओर निष्पक्ष चुनाव की जिम्मेदारी है, तो दूसरी ओर राज्य की प्रशासनिक स्थिरता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।बंगाल जैसे बड़े और संवेदनशील राज्य में यह संतुलन और भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि यहां चुनाव केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि कानून-व्यवस्था की दृष्टि से भी बड़ी चुनौती होते हैं।आने वाले दिनों में अदालत का रुख इस मामले में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

प्रयागराज में दर्दनाक हादसा: धमाके के बाद कोल्ड स्टोरेज ढहा, चार मजदूरों की मौत

@ रिंकू विश्वकर्मा

प्रयागराज के फाफामऊ इलाके में सोमवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे ने पूरे शहर को झकझोर कर रख दिया। करीब डेढ़ बजे अचानक तेज धमाके की आवाज सुनाई दी और देखते ही देखते एक कोल्ड स्टोरेज की बड़ी बिल्डिंग भरभराकर गिर गई। इस हादसे में चार मजदूरों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए।हादसे के वक्त वहां काम कर रहे करीब 20 मजदूर मलबे में दब गए थे। जैसे ही बिल्डिंग गिरी, आसपास के लोग दहशत में आ गए। किसी को समझ नहीं आया कि आखिर कुछ ही सेकंड में सब कुछ कैसे खत्म हो गया। धूल और मलबे के बीच चीख-पुकार मच गई।मृतकों की पहचान पिलत चौधरी, मशींदर, ज्योतिष और जगदीश के रूप में हुई है। इनमें से जगदीश प्रयागराज के रहने वाले थे, जबकि बाकी तीन मजदूर बिहार से काम करने आए थे। ये सभी अपने परिवार की रोजी-रोटी के लिए यहां मेहनत कर रहे थे, लेकिन किसी को अंदाजा नहीं था कि यह दिन उनकी जिंदगी

का आखिरी दिन बन जाएगा।

घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन मौके पर पहुंच गया और राहत-बचाव कार्य शुरू कर दिया गया। सात जेसीबी मशीनों की मदद से मलबा हटाया जा रहा है। अब तक 17 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। मौके पर एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें भी तैनात हैं, जो लगातार राहत कार्य में जुटी हुई हैं।प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, हादसे की शुरुआत एक तेज धमाके से हुई। लोगों का कहना है कि पहले अमोनिया गैस के स्टोरेज टैंक में विस्फोट हुआ, जिसके बाद आरसीसी पिलर का ढांचा कमजोर पड़ गया और

मलबे में दबे मजदूरों को निकालने में जुटी रेस्क्यू टीमें, अमोनिया गैस टैंक में विस्फोट की आशंका

पूरी बिल्डिंग अचानक ढह गई। हालांकि, विस्फोट की असली वजह क्या थी, इसका पता जांच के बाद ही चल सकेगा। जिस कोल्ड स्टोरेज में यह हादसा हुआ, उसका नाम आदर्श कोल्ड स्टोरेज है। यह करीब 27 साल पुराना बताया जा रहा है और सपा नेता व पूर्व मंत्री अंसार अहमद का है। यह परिसर लगभग 5 हजार वर्ग फुट जमीन पर बना है, जिसमें तीन अलग-अलग बिल्डिंग थीं। इनमें से करीब 10 हजार वर्ग फुट क्षेत्र में बनी एक बड़ी बिल्डिंग पूरी तरह ढह गई।

यहां रोजाना 100 से ज्यादा लोग काम करते थे। हादसे के वक्त कुछ मजदूर खाना खा रहे थे, तो कुछ आराम कर रहे थे। अचानक हुए धमाके ने उन्हें संभलने का मौका तक नहीं दिया। कई मजदूर मलबे के नीचे दब गए, जिन्हें निकालने के लिए घंटों तक मशक्कत करनी पड़ी।घटना के बाद पुलिस ने कोल्ड स्टोरेज के मैनेजर और अंसार अहमद के परिवार के कुछ सदस्यों को हिरासत में ले लिया है। उनसे पूछताछ की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कहीं लापरवाही तो इस हादसे की वजह नहीं बनी।

हादसे की खबर फैलते ही इलाके में लोगों की भारी भीड़ जुट गई। हर किसी के चेहरे पर डर और दुख साफ नजर आ रहा था। कई लोग अपने परिजनों को खोजते हुए मौके पर पहुंचे, तो किसी को अस्पतालों का रुख करना पड़ा।इस दुखद घटना पर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने गहरा शोक व्यक्त किया है। मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की गई है।हालांकि, सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या यह हादसा टाला जा सकता था। इतने पुराने कोल्ड स्टोरेज में सुरक्षा मानकों का पालन हो रहा था या नहीं, इसकी जांच अब जरूरी हो गई है। अमोनिया गैस जैसे खतरनाक तत्व के साथ काम करने वाली जगहों पर विशेष सावधानी की जरूरत होती है, लेकिन अक्सर इन नियमों को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

2029 से पहले महिला आरक्षण लागू करने की तैयारी

संसद में बढ़ सकती हैं सीटें, राजनीति में बड़ा बदलाव तय

@ शोभित यादव

केंद्र सरकार देश की राजनीति में एक बड़ा बदलाव लाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। सरकार की योजना है कि 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण लागू कर दिया जाए। इसके लिए संसद के मौजूदा सत्र में दो अहम विधेयक लाए जा सकते हैं, जिनके जरिए पहले से तय शर्तों में बदलाव किया जाएगा।अगर यह प्रस्ताव लागू होता है, तो लोकसभा की कुल सीटों की संख्या 543 से बढ़कर 816 हो सकती है। इसमें से 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। यह बदलाव न केवल संसद की संरचना को बदलेगा, बल्कि देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को भी एक नई दिशा देगा।

जनगणना का इंतजार खत्म करने की तैयारी

दरअसल, वर्ष 2023 में महिला आरक्षण कानून संविधान के 106वें संशोधन के रूप में पारित किया गया था। इस कानून के तहत यह प्रावधान रखा गया था कि महिला आरक्षण नई जनगणना के बाद ही लागू होगा।लेकिन अब सरकार इस शर्त में बदलाव करना चाहती है। प्रस्ताव यह है कि नई जनगणना का इंतजार करने के बजाय 2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर ही परिसीमन किया जाए। इससे प्रक्रिया में तेजी आएगी और आरक्षण को तय समय पर लागू किया जा सकेगा।यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि जनगणना में देरी के चलते आरक्षण लागू होने में काफी समय लग सकता था। सरकार इस देरी को खत्म कर जल्द से जल्द महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने की दिशा में काम करना चाहती है।

दो अहम विधेयक होंगे पेश

सरकार इस दिशा में दो अलग-अलग विधेयक लाने की तैयारी में है। पहला विधेयक नारी शक्ति वंदन अधिनियम में संशोधन से जुड़ा होगा, जबकि दूसरा परिसीमन कानून में बदलाव से संबंधित होगा।इन दोनों विधेयकों को पास कराने के लिए संसद में दो-तिहाई बहुमत की जरूरत होगी। यही वजह है कि सरकार विपक्षी दलों से भी समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है।

सहमति बनाने की कोशिशें तेज

गृहमंत्री अमित शाह ने इस मुद्दे पर सहमति बनाने के लिए सोमवार को कई दलों के नेताओं के साथ बैठक की। इसमें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगी दलों के साथ-साथ गैर-कांग्रेसी विपक्षी दलों के नेता भी शामिल हुए।समाजवादी पार्टी, वाईएसआर कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट), राष्ट्रीय जनता दल और एआईएमआईएम जैसे दलों से चर्चा की गई है। बीजेडी और शिवसेना (यूबीटी) से भी बातचीत हो चुकी है।हालांकि, कांग्रेस के साथ अभी बातचीत बाकी है। माना जा रहा है कि अगर सभी दलों के बीच सहमति बन जाती है, तो यह विधेयक इसी सप्ताह संसद में पेश किए जा सकते हैं।

जनगणना का इंतजार खत्म करने की तैयारी, नए प्रस्ताव से लोकसभा की सीटें 816 तक बढ़ने की संभावना

- संसद में महिलाओं की हिस्सेदारी अब तक करीब 14% ही, 33% आरक्षण इसे दोगुना से ज्यादा कर सकता है।
- 543 से 816 सीटों का प्रस्ताव सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि महिलाओं की राजनीतिक ताकत का विस्तार है।
- पंचायतों में 50% तक आरक्षण ने नेतृत्व बदला, अब वही मॉडल संसद में लागू करने की तैयारी है।
- 1993 के बाद स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी, अब 2029 से संसद की बारी है।
- 273 सीटें महिलाओं के नाम होने का मतलब- नीति निर्माण में आधी आबादी की सीधी भागीदारी।

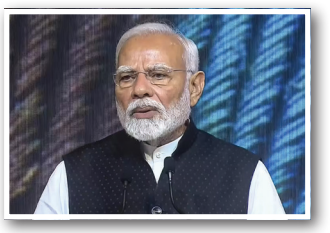

महिला सशक्तिकरण हमारी सरकार की प्राथमिकता है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना देश के लोकतंत्र को और मजबूत करेगा।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री, भारत)

हम सभी दलों के साथ चर्चा कर व्यापक सहमति बनाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि महिला आरक्षण को जल्द से जल्द लागू किया जा सके और देश की राजनीति में संतुलन आए।

अमित शाह (गृहमंत्री)

हम महिला आरक्षण के पक्ष में हैं, लेकिन इसे पूरी पारदर्शिता और सभी वर्गों को न्याय देते हुए लागू किया जाना चाहिए, खासकर अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं को भी इसमें शामिल करना जरूरी है।

मल्लिकार्जुन खड़गे (कांग्रेस अध्यक्ष)

आरक्षण का ढांचा कैसा होगा

प्रस्ताव के अनुसार, लोकसभा की 816 सीटों में से 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। इस आरक्षण में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं को उनके मौजूदा कोटे के भीतर हिस्सा मिलेगा।हालांकि, अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए अलग से कोई प्रावधान फिलहाल इस प्रस्ताव में शामिल नहीं है। यह एक ऐसा मुद्दा है, जिस पर आगे राजनीतिक बहस हो सकती है।सरकार की योजना है कि यही ढांचा राज्यों की विधानसभाओं में भी लागू किया जाए, ताकि पूरे देश में एक समान व्यवस्था बन सके।

अब तक क्यों नहीं लागू हो पाया कानून

महिला आरक्षण कानून 2023 में संसद से पारित हो चुका है और राष्ट्रपति की मंजूरी भी मिल चुकी है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों में इसे व्यापक समर्थन मिला था।लेकिन इसके बावजूद यह कानून अभी तक लागू नहीं हुआ है। इसकी मुख्य वजह यही है कि इसमें नई जनगणना और उसके बाद परिसीमन को अनिवार्य शर्त के रूप में रखा गया था। अब सरकार इन शर्तों में बदलाव कर इसे जल्द लागू करने की दिशा में कदम उठा रही है।

इतिहास में पुरानी मांग, नया मोड़

महिलाओं के लिए राजनीतिक आरक्षण का मुद्दा कोई नया नहीं है। इसकी जड़ें देश के स्वतंत्रता आंदोलन तक जाती हैं।1931 में पहली बार इस विषय पर चर्चा हुई थी। उस समय बेगम शाह नवाज और सरोजिनी नायडू जैसी महिला नेताओं ने महिलाओं के लिए विशेष आरक्षण के बजाय समान राजनीतिक अधिकारों की मांग पर जोर दिया था।बाद के वर्षों में भी यह मुद्दा समय-समय पर उठता रहा, लेकिन ठोस रूप से कोई फैसला नहीं हो सका।

1970 के दशक से बढ़ी चर्चा

1971 में महिलाओं की स्थिति पर एक समिति का गठन किया गया, जिसमें इस विषय पर विचार किया गया। हालांकि उस समय कई सदस्यों ने विधायी निकायों में आरक्षण का विरोध किया।1974 में एक रिपोर्ट के जरिए पंचायत और नगर निकायों में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित करने की सिफारिश की गई। यह एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने आगे की दिशा तय की।

पंचायती राज से मिली मजबूती

1988 में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना ने पंचायत स्तर से लेकर संसद तक महिलाओं को आरक्षण देने की बात कही। इसी सोच ने आगे चलकर 73वें और 74वें संविधान संशोधनों का आधार तैयार किया।1993 में इन संशोधनों के जरिए पंचायतों और नगर निकायों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित की गईं। इसके बाद कई राज्यों ने इस आरक्षण को बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक कर दिया।इस व्यवस्था ने स्थानीय स्तर पर महिलाओं की भागीदारी को काफी बढ़ाया और कई महिलाएं नेतृत्व की भूमिका में सामने आईं।

संसद में लागू होने से क्या बदलेगा

अगर महिला आरक्षण संसद में लागू होता है, तो इसका प्रभाव दूरगामी होगा। इससे राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी और नीति निर्माण में उनकी भूमिका मजबूत होगी। अब तक संसद में महिलाओं की संख्या सीमित रही है। ऐसे में यह कदम न केवल प्रतिनिधित्व बढ़ाएगा, बल्कि सामाजिक संतुलन को भी मजबूत करेगा।हालांकि इस प्रस्ताव के सामने कई चुनौतियां भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती राजनीतिक सहमति की है। दो-तिहाई बहुमत के बिना यह संभव नहीं है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

प्रथम नवरात्र भोर की बेला
मन भर फूल गिराता कोई जंगल

उन स्कंधों पर जहाँ मुक्त नयन टीके थे
पाट विस्तृत और मंजिष्ठ गृह दिखते डोलते से

जब गंध की कामना लिए गिरते निर्मम अश्रु
तुम्हारे अजेय अँगूठे पर रुकी मैं

जवा खोल डाले केशों से
एक एक गाँठ ज्यों अरुणिम स्पर्श भरे सघन तिमिर वक्ष में

पूर्ण ही करती थी अर्पण
बस तभी चंद्र ने पवित्र कर दिया मेरा मुख

बस सभी मनोरथ सिद्ध हुए उस क्षण
प्रथम नवरात्र भोर की बेला

मंगल-कामना का सिंदूर बह कर आ गया नखों में
रक्ताभ होती गई देह

ज्यों फिरा ले आए हो देवी को ब्रह्मपुत्र से विजया के दिवस
मुझे भी फिरा ले जाते तुम तो क्या मैं मान न जाती

ज्यों वशहीन हुए नगाड़े नृत्य करते थे हाथों पर।
द्वितीय दिवस निद्रा से उठना

विस्मय से तकती थी मैं अपराह्न पहर
धान से कैसे फुट गई सुगंध

वक्ष में जब नीर न था और
लोटे का जल घेर लिया था रुग्ण मुख ने

छवि पर तेज़ धार और खड्ग उष्ण थी कैसे
जब मैंने एक पहर भी नहीं किया ध्यान तेरा

न युगों ने अपनी वृति लाँघी
नौ दिवस सम्मुख हैं

काँपते मेघों में
द्वितीय दिवस प्रण ही करूँगी ब्रह्मचर्य का

निश्चय ही स्वास्तिक गोदवाऊँगी कोरों के निकट
निश्चय ही अष्टभुजा में लिए

खिलाऊँगी शिशु सदृश्य तुम्हारी सृष्टि
इस दिव्य स्वप्न में नित्य कोमल होंगे कमल

निद्रा से उठ कहूँगी रखो अपनी मंगल-कामना
प्रत्येक वर्ष की तरह प्रथम चंद्र के पूर्व

कहा भी तो नहीं रिक्त कोष्ठों में बाँध कर पल्लव
श्वास में भर कर धूम्र

फिर आओ मंडप में प्रिय
तुम एक वर्ष रहती हो मृत्यु में

मात्र नौ दिन जीवन में।
अत्यंत शुभ मुहूर्त की तृतीया

कास के फूलों से उतर
स्वर्ण काया-सी लौटती तृतीय नवरात्र की भोर

सूर्य यों प्राण फूँकता की शुभ्र नींबू माल में देख लो
तुम गहन तिमिर का मर्दन

बताओ प्रिये
क्यूँ स्वप्न में आमंत्रित करता है ठाकुर दालान मुझे

आगमणी गाते हैं बेल-पत्र
कोचु शाक और पंत भात की भाँति जिह्वा पर रहता है

तुम्हारा अनुराग
प्रवेश की बेला ही हो गया था तर्पण मेरा

ऐसा कैसे हो पाया की मृत देह जी उठी
धुनूची के धूम्र और ढाक की मदिर लय से

आज मृदु है नीर आश्रम सरोवर का
कल, हाँ कल तुम छोड़ आना मुझे भीषण निद्रा में

भागीरथी के तट
अत्यंत शुभ मुहूर्त में संभव है

चंद्र की भाँति लुप्त हो जाए लालिमा कामदूधा काल की
संभव है शमन अग्नि का गाढ़ काजल की भाँति

अत्यंत शुभ मुहूर्त में
अनुरक्ति से ही संभव है विरक्ति।

चतुर्थी स्नान
स्नान को उद्धत ही उठी चतुर्थ नवरात्र की मधुर बेला

समस्त भू किसलय पंक्तिबद्ध टोहते स्वेद करंज के
पीली धोती अटकी बिल्व पत्र की डाली में

ज्यों प्रेम करने को ही बुलाया हो इस स्निग्ध कुंज ने
बिंध देते शूल

एक एक पग बढ़ती भोर को तुम्हारे सरोवर की ओर
पग पग पर झर आते थे मकरंद स्पर्श के

आम्र पत्र ढकी मटकी लज्जा की
बस उलट आई ताल पर

किंचित मेह भर नेत्र में, कर दी वृष्टि
बता पाओगे तुम

क्यूँ प्रसन्न है मन भोग की जूठन धरते मुख में
क्यों रात्रि भर डोल कर माँगती रही

पके कटकल फल
देखो विस्मृति नहीं हुई तुम्हारी

कभी तुम्हारे पगचिह्न देखे थे मेरे मंड में जाते
मात्र प्रतिमा सुसज्जित थी और गहन धूम्र से चढ़े तुम्हारे दृग

किंचित दूर था भोग कदली पते पर तुम्हारे आसन से
मगर तब खींच कर दिया था मैंने

प्राँगण में बँधा नारियल तरुवर तुम्हारे निकट
चतुर्थ बार चढ़ी नौका एक बरस में

स्मरण है तुम्हें
मल्हार के वहाँ देखा था कैसे भरता था वह उदर

मत्स्य कन्याओं का मत्स्य रस से।
पंचम का मेघाछन्न नभ

पंचम नवरात्र का दिवस और मेघाछन्न नभ
कौमार्य के जल से नहला कर ही

प्राप्त किया था शिव और शैशव
ब्रह्मांड अपने वात्सल्य और उन्माद में

यों ही कोई बिखेर नहीं देता प्रीति
मगर उस दिवस अत्यधिक वृष्टि हुई

इसी मास गारो पर्वत से निकलती थी उष्ण धाराएँ
और तुम्हारे नाभि कमल पर प्रतिष्ठित

त्रिपुरारी सुंदरी की छाया से उन्नत हुए गुड़हल
एकांत कामना करते

रात्रि शेष होने को थी जब छूट गया तुम्हारा हाथ
शव की भाँति कंधों पर लिए समस्त भूमि पर

विचरे तुम
रख दिए अंग इतने दूर की बारह भुजाओं से भी

अंक में भर न पाई ये जन्म
प्रदोष-काल के पश्चात ही जल छोड़ेगा ये

अग्निकूप
तब तुम बताना कैसा चंद्र-सा मुख है

मेरी गोद में तुम्हारे बालक का।
षष्ठी का तिमिर मर्दन

प्रखर ताप में अडिग थी तेरे निकट
स्वेद-कण भी दिखता स्वर्ण-सा

कैसी मरीचिका-सा है यह दिवस प्रिये
ऐसी घुली कार्तिक रात्रि

ज्यों दूध में घोंट कर दी थी तुम्हें मिश्री
छह दिनों के संसर्ग में

स्तूप भव्य ही हुए संयम के
कामना स्तंभ ज्यों मेघ चुने को विकल

स्पर्श जहाँ-जहाँ हुए तुम्हारे
उस चंदन वन पर

सर्प लिपटने दिए
मैनें फिर भी न कहा

देखो तो
ताम्बूल पत्र से रँगे होंठ

लज्जा और अपमान कर वर्ण कैसा सजाया
कोई नहीं जान पाया

कितना गहन अंधकार है इस रक्तसिमूल के पीछे।
सप्तम काल की मधुरिम उच्छ्वास

अत्यंत चाव में तिर आए बासी गंधराज
दीपों का धूम्र तक उड़ गया

लपट धवल चक्र-सी ऊभचूभ होती
और सहस्र मुनि जन एक लय में उच्चारते

माँ, तुमि थाको आमार हृदोए
सप्तम काल की मधुरिम उच्छवास

कानों पर भ्रमर-सी गूँजती रहती
एक एक लट में सहस्र प्रेम-मंत्र

क्या ही सुख है
आर्द्र फूलों का ग्रीवा से गुँथना

मेघ, कमल, सिंदूर और
तुम्हारे सूर्य के अभिमान में तपा जल

कैसा दिखता होगा
सोचो तो ज़रा

जीव, पादप, नदियाँ और नक्षत्र
सभी बिंब तुम्हारी देह के

क्या ही सुख है
एक-एक बिंब पर पाँव दिए

निपट व्योम में उतरने का।
अष्टम की प्रज्जवलित काया

इतनी ही तेज प्रभा होती है
ऋतुमती की

कि भूलवश खिंच आई मैं
धूल-धूसरित पग लिए

पर्वत पर इस दिवस अलौकिक तिमिर छाया
काया पर लाल सूर्य

कितना पुकारा उस पुष्प साधक ने
निर्भय श्वास भर

एक-एक नीलाभ की काँती में ज्यों
दो नेत्रों की आहुति

मैं एक चंपा माल तक न गूँथ पाई माँ
तेरे बहाने

अपनी वेणी के स्वर में
नवम काल की प्रतीक्षा है रक्त जवा का

मौन कटी पर डोलता धीमे
अंतर भी क्या

मात्र ऋतुचक्र के दिवस
तू मुझ में रंगहीन दिखे या मैं

नवपरिणीता-सी तुझ में।
नवम का प्रणयोत्सव

नौ दिवस के समर्पण से कुम्हलाई
आत्म की देह

उठाए नहीं उठती
उजास स्पर्श अंतिम आलिंगन का

कोटि-कोटि रतन मुझ पर ज्यों
वेदना असहाय

तुम्हारे स्कंधों पर विचरण करते
निर्वसन अंग

मनों भारी हैं
धृत की भाँति ज्यों

सब तैर आए मृत्यु में
देह मंड दुखती है मेरी

निमग्न रिक्त कुमकुम से
शंख, अधर, चुंबन से

प्रातः प्रकोष्ठ, मधुसिक्त दीपक से
तुमसे प्रिये,

सुनो मेहों का कोलाहल
गाद भरे भुवन में छोड़ आने को कहते

रंचमात्र बचा ले जाते हैं प्रभा
कुपित कलशों में उलटने

तुम्हारे जगत के
उत्सव ऐसे ही होते हैं।

ज्योति शोभा

धुरंधर 2 का तूफान

चार दिन में 750 करोड़, रिकॉर्ड भी टूटे और विवाद भी बढ़े

@ सौम्या चौबे

रणवीर सिंह की फिल्म 'धुरंधरः द रिवेंज इन दिनों सिनेमाघरों में धूम मचा रही है। रिलीज के महज चार दिनों में फिल्म ने दुनियाभर में 750 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है। यह आंकड़ा सिर्फ बड़ा ही नहीं, बल्कि यह बताता है कि फिल्म ने दर्शकों के बीच कितनी मजबूत पकड़ बना ली है।रविवार को फिल्म ने भारत में 114.85 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया, जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। वीकेंड के आंकड़े सामने आने के बाद यह साफ हो गया है कि 'धुरंधर 2' सिर्फ एक हिट फिल्म नहीं, बल्कि एक बड़ी बॉक्स ऑफिस घटना बन चुकी है।

टूटे कई बड़े रिकॉर्ड

फिल्म ने ओपनिंग वीकेंड के मामले में कई बड़ी फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है। शाहरुख खान की 'पठान' और 'आरआरआर' जैसी फिल्मों के रिकॉर्ड अब पीछे छूट चुके हैं। जहां 'पठान' ने पांच दिनों में 287 करोड़ रुपये कमाए थे, वहीं धुरंधर 2 ने चार दिन में ही उससे आगे निकल गई।इतना ही नहीं, बाहुबली 2, कल्कि 2898 एडी और आरआरआर जैसी फिल्मों के शुरुआती कलेक्शन को भी इस फिल्म ने पीछे छोड़ दिया है। अब यह 'पुष्पा 2' के बाद दूसरी सबसे बड़ी ओपनिंग वीकेंड वाली भारतीय फिल्म बन चुकी है।

2026 की सबसे बड़ी फिल्म बनी

साल 2026 के लिए यह फिल्म अब तक की सबसे बड़ी कमाई करने वाली फिल्म बन गई है। रिलीज के तीसरे ही दिन इसने 'बॉर्डर 2' को पीछे छोड़ दिया था।रविवार के बाद के आंकड़ों ने इसकी स्थिति और मजबूत कर दी है। 'गदर 2' और 'सालार' जैसी फिल्मों के लाइफटाइम कलेक्शन को पार कर लेना इस बात का संकेत है कि फिल्म लंबे समय तक सिनेमाघरों में टिक सकती है।

2000 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद

फिल्म की रफ्तार को देखते हुए ट्रेड विशेषज्ञ काफी उत्साहित हैं। उनका मानना है कि यह फिल्म 1000 करोड़ का आंकड़ा बहुत आसानी से पार कर लेगी।अगर वीकडेज में भी फिल्म की कमाई मजबूत बनी रहती है, तो यह 2000 करोड़ तक पहुंचने वाली दूसरी हिंदी फिल्म बन सकती है। हालांकि यह रास्ता आसान नहीं होगा, लेकिन शुरुआत ने उम्मीदें जरूर बढ़ा दी हैं।

पहले भाग की सफलता का असर

'धुरंधर' का पहला भाग भी जबरदस्त हिट रहा था। उसने दुनियाभर में करीब 1307 करोड़ रुपये की कमाई की थी। भारत में उसका नेट कलेक्शन लगभग 840 करोड़ रुपये था।विदेशों में भी फिल्म को शानदार रिस्पॉन्स मिला था, खासकर अमेरिका और कनाडा में। यही वजह है कि दूसरे भाग को लेकर दर्शकों में पहले से ही उत्साह बना हुआ था, जो अब बॉक्स ऑफिस पर साफ दिखाई दे रहा है।

कमाई के साथ बढ़ते विवाद

जहां एक ओर फिल्म रिकॉर्ड तोड़ रही है, वहीं दूसरी ओर विवाद भी इसका पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। खासतौर पर तमिलनाडु में फिल्म को लेकर विरोध तेज हो गया है।चुनावी माहौल के बीच फिल्म के प्रदर्शन पर सवाल उठाए जा रहे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि फिल्म की कहानी और विषय राजनीतिक प्रकृति के हैं, जो आचार संहिता का उल्लंघन कर सकते हैं।

हाईकोर्ट तक पहुंचा मामला

तमिलनाडु में फिल्म पर रोक लगाने की मांग को लेकर मामला अदालत तक पहुंच गया है। एक याचिकाकर्ता ने मद्रास हाईकोर्ट में जल्द सुनवाई की मांग की और फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगाने की अपील की।हालांकि अदालत ने तुरंत कोई फैसला नहीं दिया और याचिकाकर्ता को औपचारिक याचिका दाखिल करने को कहा है। अब इस मामले में आगे क्या होगा, इस पर सबकी नजर टिकी हुई है।

रिलीज टाइमिंग पर सवाल

अगले महीने तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में फिल्म की रिलीज का समय भी विवाद का कारण बन गया है।प्रशासन और अदालत दोनों ही इस बात को लेकर सतर्क हैं कि चुनाव के दौरान किसी भी तरह की संवेदनशील सामग्री माहौल को प्रभावित न करे। यही वजह है कि फिल्म के कंटेंट पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं।

दर्शकों का समर्थन बरकरार

विवादों के बावजूद दर्शकों का रुझान फिल्म की ओर बना हुआ है। सिनेमाघरों में भीड़ साफ दिख रही है और टिकटों की मांग भी लगातार बनी हुई है।कई दर्शक फिल्म को मनोरंजक और बड़े स्तर की प्रस्तुति वाला बता रहे हैं, जबकि कुछ लोग इसके विषय को लेकर अपनी अलग राय भी रख रहे हैं।

कमाई में नई ऊंचाई, लेकिन चुनावी माहौल में फिल्म पर उठे सवाल

- चार दिन में 750 करोड़-धुरंधर 1 सिर्फ फिल्म नहीं, बॉक्स ऑफिस पर सुनामी बन गई है।
- रिकॉर्ड टूट रहे हैं एक के बाद एक, लेकिन विवाद भी कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं।
- कमाई आसमान छू रही है, मगर राजनीति की छाया फिल्म पर भारी पड़ती दिख रही है।
- दर्शकों का प्यार बरकरार, लेकिन अदालत का फैसला तय करेगा आगे का रास्ता।
- धुरंधर 1 ने साबित किया हिट होने के लिए कहानी ही नहीं, टाइमिंग भी जरुरी है।

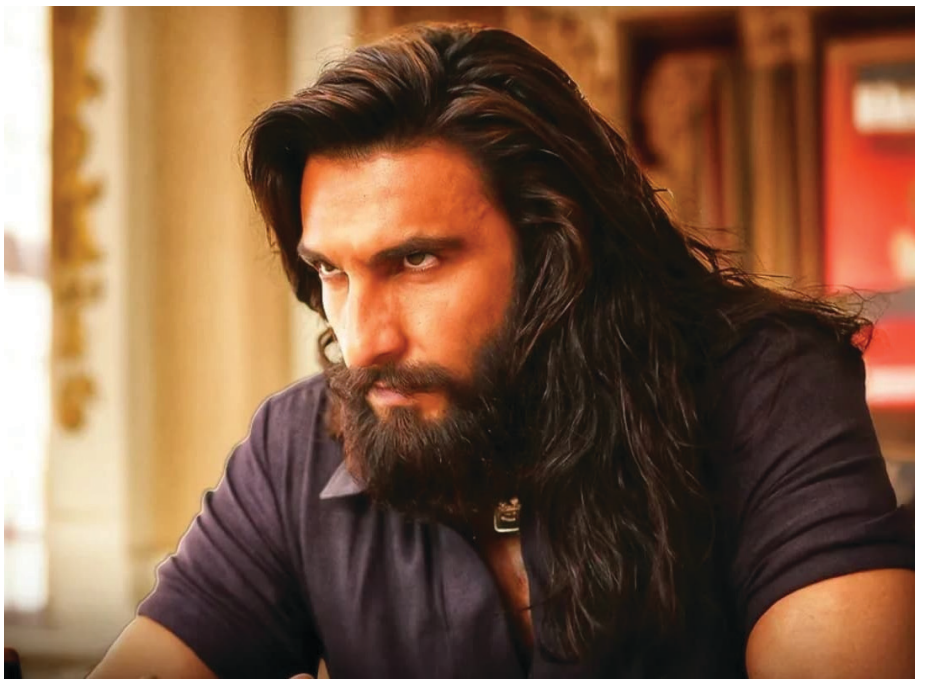

आरके स्टूडियो को लेकर फैली चर्चा पर करीना का साफ जवाब

अभिनेत्री करीना कपूर ने आरके स्टूडियो को दोबारा शुरू करने की खबरों को पूरी तरह अफवाह बताया है। उन्होंने कहा कि फिलहाल ऐसा कोई प्लान तय नहीं हुआ है। करीना के मुताबिक परिवार में इस विषय पर पहले चर्चा जरूर हुई थी, लेकिन बाद में सभी ने साफ कर दिया कि अभी इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया जा रहा। उन्होंने यह भी कहा कि लोग आज भी आरके स्टूडियो से जुड़ी भावनाएं रखते हैं और उसे फिर से देखना चाहते हैं, लेकिन अभी कोई ठोस प्रस्ताव सामने नहीं है।

लैक्मे फैशन वीक में सितारों की चमक, दिशा पाटनी बनीं शोस्टॉपर

मुंबई में चल रहे लकमी फैशन वीक के तीसरे दिन कई सितारों ने रैंप पर जलवा बिखेरा। दिशा पाटनी ने ब्लैक आउटफिट के साथ स्टेटमेंट दुपट्टा और आकर्षक ज्वेलरी पहनकर शोस्टॉपर के रूप में सबका ध्यान खींचा। वहीं ख़ुशी कपूर फ्लोरल डिजाइन वाले लहंगे में नजर आईं और कलेक्शन की तारीफ की। शो का समापन मालविका ने ऑल-व्हाइट अंदाज में किया, जिसमें उनका लुक खासा सराहा गया।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

हरियाली के दावों की सच्चाई

योगी सरकार के हरित दावों की सच्चाई: आंकड़ों में रिकॉर्ड, जमीन पर कितना असर?

आज अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के मौके पर लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में अरण्य समागम नाम की कार्यशाला हुई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अब तक 2467 वन आधारित उद्योग स्थापित हो चुके हैं। पिछले नौ सालों में 242 करोड़ से ज्यादा पौधे लगाए गए हैं। यह संख्या विश्व रिकॉर्ड जैसी है। एक दिन में ही 37 करोड़ पौधे लगाने का रिकॉर्ड भी बनाया गया। मुख्यमंत्री ने बताया कि इन प्रयासों से वन क्षेत्र में 559.19 वर्ग किलोमीटर की बढ़ोतरी हुई है। भारतीय वन रिपोर्ट 2023 में यह बात साफ लिखी है। उन्होंने कहा कि वन सिर्फ पर्यावरण नहीं बल्कि रोजगार और अर्थव्यवस्था का भी आधार हैं। सरकारी बजट में भी बढ़ोतरी हुई है। सामाजिक वानिकी के लिए 800 करोड़ रुपये दिए गए हैं। नर्सरी बनाने के लिए 220 करोड़ और रानीपुर टाइगर रिजर्व के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। किसानों को कार्बन क्रेडिट के तहत 49 लाख रुपये बांटे गए। दो किसानों को 10-10 हजार रुपये के चेक भी दिए गए। वन्यजीवों की संख्या बढ़ी है। बाघ 173 से बढ़कर 205 हो गए। हाथी 232 से 352 पहुंचे। गंगा डॉल्फिन की संख्या 2397 हो गई। रामसर साइट्स एक से बढ़कर 11 हो गईं। लक्ष्य 100 करने का है। मुख्यमंत्री ने सबको अपील की कि हर व्यक्ति अपनी मां के नाम एक पेड़ लगाए। उन्होंने कहा कि वन जल देते हैं, जल हवा देता है और हवा जीवन। यह संदेश पूरे प्रदेश में फैलाया जा रहा है।

242 करोड़ पौधों की कहानी - आंकड़े और जमीनी हकीकत

सरकार का दावा है कि पिछले नौ साल में 242 करोड़ से ज्यादा पौधे लगाए गए। हर साल बड़े पैमाने पर अभियान चलाए जाते हैं। एक बार 37 करोड़ पौधे एक दिन में लगाने का रिकॉर्ड भी कायम हुआ। वन विभाग के साथ 26 अन्य विभागों ने मिलकर यह काम किया। नर्सरी की क्षमता अब 50 करोड़ पौधे सालाना बनाने की हो गई है। इस साल 35 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2023 में साफ कहा गया कि उत्तर प्रदेश का कुल हरा-भरा क्षेत्र 9.96 प्रतिशत हो गया है। पहले यह 9.73 प्रतिशत था। वन क्षेत्र 6.24 प्रतिशत पहुंच गया। पेड़ों का क्षेत्र बाहर के इलाकों में भी बढ़ा है। कुल बढ़ोतरी 559.19 वर्ग किलोमीटर हुई जो इंदौर शहर जितनी जमीन है। सरकार के अनुसार पौधों का जीवित रहने का औसत 75 से 86 प्रतिशत है। 2021 से 2024 तक 86.67 प्रतिशत पौधे बचे। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून और छत्तीसगढ़ की यूनिवर्सिटी जैसी तीसरे पक्ष की एजेंसियां जाँच करती हैं। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि बड़े आंकड़ों की पूरी जाँच मुश्किल है लेकिन सरकारी रिपोर्ट्स में सुधार साफ दिखता है। पेड़ मुख्य रूप से सड़कों, नदियों और गांवों में लगाए गए। इससे किसानों की आमदनी भी बढ़ी। कार्बन क्रेडिट से फायदा हुआ। हालांकि घने जंगल की तुलना में बाहर के पेड़ ज्यादा बढ़े हैं। फिर भी कुल हरियाली बढ़ने से गर्मी कम हुई और हवा साफ हुई। लोग अब ज्यादा जागरूक हो रहे हैं।

2467 वन आधारित उद्योग — रोजगार और अर्थव्यवस्था का नया आधार

मुख्यमंत्री ने दावा किया कि नौ साल में 2467 से ज्यादा वन आधारित उद्योग प्रदेश में स्थापित हो चुके हैं। नियम सरल किए गए। कानून व्यवस्था मजबूत हुई। उद्यमियों को भयमुक्त माहौल दिया गया। ये उद्योग लकड़ी, बांस, फल-फूल और अन्य जंगली उत्पादों पर आधारित हैं। इससे गांवों में रोजगार बढ़ा। किसान और युवा दोनों को फायदा हुआ। वन उत्पादों से आय बढ़ी। सरकार ने कहा कि ये उद्योग पर्यावरण और अर्थव्यवस्था दोनों को जोड़ते हैं। उद्योगों के लिए विशेष नीतियां बनाई गईं। इससे छोटे उद्यमी आगे आए। कुछ उद्योग बांस की चीजें बनाते हैं तो कुछ औषधीय पौधों पर काम करते हैं। इससे ग्रामीण इलाकों में आय के नए स्रोत खुले। कार्बन क्रेडिट योजना से किसान अतिरिक्त पैसे कमा रहे हैं। उत्तर प्रदेश पहला राज्य है जहां किसानों को यह सीधा फायदा दिया गया। उद्योगों से जुड़े लोग अब स्थिर जीवन जी रहे हैं। हालांकि कुछ लोग पूछते हैं कि इन उद्योगों की संख्या की स्वतंत्र जाँच कहां हुई। सरकारी आंकड़े ही मुख्य स्रोत हैं। लेकिन कोई बड़ी शिकायत या विवाद सामने नहीं आया। ये उद्योग पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना चल रहे हैं क्योंकि नियम सख्त हैं। इससे युवाओं को शहर छोड़कर गांव में ही काम मिल रहा है। अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है।

उत्तर प्रदेश का पर्यावरणी चित्र — प्रगति और चुनौतियां

वन रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में वन क्षेत्र अभी भी कम है। कुल 6.24 प्रतिशत ही घना जंगल है। लेकिन कुल हरा-भरा कवरेज 9.96 प्रतिशत पहुंच गया। राष्ट्रीय औसत से बाहर के पेड़ ज्यादा हैं। रिपोर्ट में उत्तर प्रदेश दूसरे नंबर पर है बढ़ोतरी में। छत्तीसगढ़ पहले स्थान पर। वन्यजीवों में अच्छा सुधार हुआ। बाघ, हाथी, सारस पक्षी और गिद्धों की संख्या बढ़ी। रामसर साइट्स बढ़कर 11 हो गईं। नदियों के किनारे पौधे लगाए गए। एक्सप्रेसवे और हाईवे पर हरियाली फैलाई गई। 75 जिलों में एक-एक नदी को बहाल करने का काम चल रहा है। अटल वन, एकलव्य वन और शहरों में वन बनाए जा रहे हैं। मानव-वन्यजीव संघर्ष को आपदा माना गया। मदद दी जा रही है। ड्रोन और ई-वॉच से निगरानी बढ़ी। फिर भी चुनौतियां हैं। शहर बढ़ रहे हैं। जमीन का दबाव है। घने जंगल बनाने में समय लगता है। कुछ जगह पौधे सूख भी जाते हैं। लेकिन तीसरे पक्ष की जाँच से सुधार साफ है। कुल मिलाकर हरियाली बढ़ने से मौसम बेहतर हुआ। गर्मी कम लग रही है। लोगों को साफ हवा मिल रही है। वन विभाग की नौकरियां भी बढ़ीं। 2500 से ज्यादा युवा भर्ती हुए। यह सब पर्यावरण को मजबूत बना रहा है।

दावे की सच्चाई और आगे का सफर

सरकारी दावे ज्यादातर आधिकारिक रिपोर्ट्स से मिलते हैं। 242 करोड़ पौधों का आंकड़ा और 559 वर्ग किलोमीटर बढ़ोतरी वन रिपोर्ट में दर्ज है। 2467 उद्योगों का दावा भी आज की कार्यशाला में दोहराया गया। जीवित पौधों की दर 75 से 86 प्रतिशत तक बताई गई। तीसरे पक्ष की एजेंसियां जाँच करती हैं। वन्यजीव और रामसर साइट्स में वृद्धि साफ है। कार्बन क्रेडिट से किसानों को फायदा हुआ। उद्योग रोजगार दे रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह भी है कि घने जंगल अभी कम हैं। बाहर के पेड़ ज्यादा बढ़े। स्वतंत्र विशेषज्ञ कहते हैं कि बड़े अभियानों की पूरी निगरानी चुनौती है। फिर भी कुल तस्वीर सकारात्मक है। मुख्यमंत्री ने 16 प्रतिशत वन कवरेज का लक्ष्य रखा है। अगले साल और बड़े अभियान चलेंगे। हर नागरिक को भाग लेना होगा। एक पेड़ मां के नाम जैसे अभियान जारी रहेंगे। 100 साल पुराने पेड़ों को विरासत घोषित किया जाएगा। अगर यह रफ्तार बनी रही तो उत्तर प्रदेश सच में हरित राज्य बन सकता है। लेकिन सबको मिलकर काम करना होगा। वन हमारा जीवन हैं। इन्हें बचाना हर किसी की जिम्मेदारी है। यह सोच हमें आगे ले जाएगी।

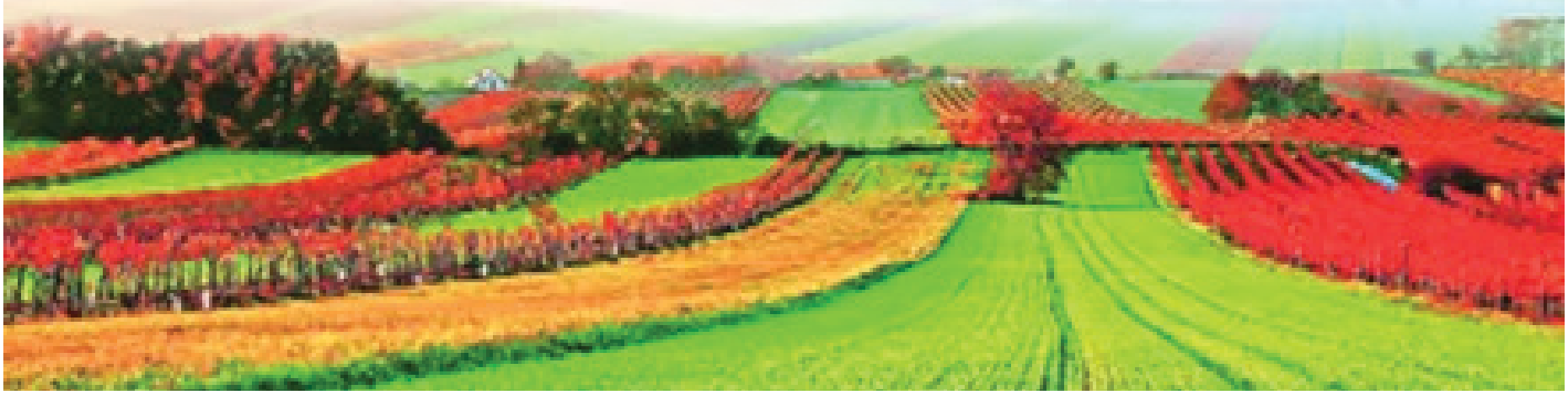

युद्ध में सोना क्यों होता है महंगा?

ईरान युद्ध में 12,000 की गिरावट के पीछे क्या कारण

सोना सदियों से लोगों का सुरक्षित निवेश माना जाता है क्योंकि जब दुनिया में जंग या बड़ा तनाव होता है तो लोग पैसा बचाने के लिए सोने की ओर भागते हैं। जंग के समय अर्थव्यवस्था अस्थिर हो जाती है, स्टॉक बाजार गिरते हैं, रुपये की कीमत कम हो सकती है और लोग सोचते हैं कि सोना तो हमेशा मूल्यवान रहता है। इसलिए इसकी मांग बढ़ जाती है और कीमतें चढ़ जाती हैं। उदाहरण के लिए, जब रूस-यूक्रेन जंग शुरू हुई तो सोने की कीमत भारत में तेजी से बढ़ी क्योंकि लोग डर गए थे कि दुनिया भर में मुश्किलें आएंगी। इसी तरह पिछले कई युद्धों में भी सोना महंगा हुआ क्योंकि यह कोई ब्याज नहीं देता लेकिन खतरे के समय यह सबसे अच्छा सहारा बन जाता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि सोना डॉलर में खरीदा-बेचा जाता है और जब तनाव बढ़ता है तो निवेशक इसे खरीदते हैं ताकि अपना पैसा सुरक्षित रख सकें। भारत में भी लोग शादी, निवेश और गहनों के लिए सोना खरीदते हैं, इसलिए यहां कीमतें और भी तेजी से प्रभावित होती हैं। लेकिन हर बार ऐसा नहीं होता। कभी-कभी अन्य कारक जैसे डॉलर मजबूत होना या ब्याज दरें ऊंची रहना सोने को रोक देते हैं। इस बार ईरान जंग में भी शुरू में यही उम्मीद थी कि सोना चढ़ेगा, लेकिन बाद में कुछ अलग हुआ। लोग अब पूछ रहे हैं कि क्या यह पुराना नियम बदल गया है या सिर्फ थोड़े समय के लिए ऐसा है। समझने के लिए हमें देखना होगा कि जंग के शुरू में क्या हुआ और फिर क्यों गिरावट आई।

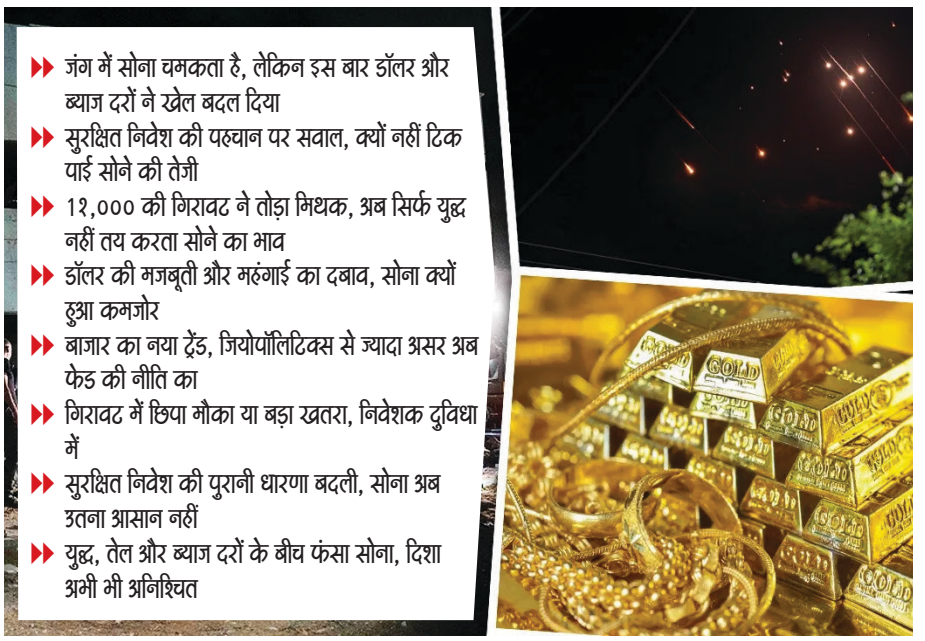

- जंग में सोना चमकता है, लेकिन इस बार डॉलर और ब्याज दरों ने खेल बदल दिया
- सुरक्षित निवेश की पहचान पर सवाल, क्यों नहीं टिक पाई सोने की तेजी
- 12,000 की गिरावट ने तोड़ा मिथक, अब सिर्फ युद्ध नहीं तय करता सोने का भाव
- डॉलर की मजबूती और महंगाई का दबाव, सोना क्यों हुआ कमजोर
- बाजार का नया ट्रेंड, जियोपॉलिटिक्स से ज्यादा असर अब फेड की नीति का
- गिरावट में छिपा मौका या बड़ा खतरा, निवेशक दुविधा में
- सुरक्षित निवेश की पुरानी धारणा बदली, सोना अब उतना आसान नहीं
- युद्ध, तेल और ब्याज दरों के बीच फंसा सोना, दिशा अभी भी अनिश्चित

ईरान जंग शुरू होते ही सोने की कीमत कितनी चढ़ी?

ईरान जंग 28 फरवरी 2026 को शुरू हुई जब अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर हमले किए। शुरू में सबको लगा कि सोना फिर से महंगा होगा क्योंकि जंग का खतरा बढ़ गया था। भारत में एमसीएक्स पर अप्रैल सोना वायदा 1,62,104 रुपये प्रति 10 ग्राम से बढ़कर 1,66,074 रुपये हो गया। कुछ बाजारों में तो कीमत 1,73,000 रुपये तक पहुंच गई। लोग डर गए थे कि तेल की आपूर्ति रुक सकती है और दुनिया भर में महंगाई बढ़ेगी। इसलिए सोना सुरक्षित जगह लगने लगा। पिछले साल भी जब इजराइल और ईरान के बीच 12 दिन की छोटी जंग हुई थी तो सोना चढ़ा था लेकिन युद्ध रुकते ही गिर गया। इस बार भी शुरू के कुछ दिनों में सोना रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा क्योंकि निवेशक सोच रहे थे कि यह लंबी जंग हो सकती है।

वैश्विक स्तर पर भी सोने की कीमत 5,300 डॉलर प्रति औंस तक चली गई। भारत में लोग गहने और निवेश के लिए खरीद रहे थे क्योंकि रुपये की कीमत भी कम हो रही थी। लेकिन यह उछाल ज्यादा दिन नहीं टिकी। सिर्फ कुछ हफ्तों में ही कीमतें तेजी से गिरने लगीं। अब लोग कह रहे हैं कि शुरू की बढ़त सोने के पुराने नियम के मुताबिक थी लेकिन बाद में कुछ नया हुआ। विशेषज्ञ बताते हैं कि पहले तो सुरक्षित निवेश की मांग बढ़ी लेकिन फिर बाजार ने देखा कि तेल महंगा हो रहा है और इससे नई समस्याएं आ रही हैं।

वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल

"जियोपॉलिटिकल तनाव के दौरान सोने की मांग बढ़ती है, लेकिन डॉलर की मजबूती और बॉन्ड यील्ड में वृद्धि सोने की कीमतों को दबा सकती है।"

टाटा म्यूचुअल फंड

"हालिया गिरावट निवेशकों के लिए अवसर हो सकती है, क्योंकि दीर्घकाल में केंद्रीय बैंकों की खरीद और वैश्विक तनाव सोने को समर्थन देते हैं।"

इस बार सोना क्यों गिर गया 12,000?

इस बार ईरान जंग में सोना 12,000 से ज्यादा गिर गया जबकि सबको उम्मीद थी कि यह महंगा होगा। इस हफ्ते अकेले में 12,000 रुपये प्रति 10 ग्राम की गिरावट आई और पूरे महीने में लगभग 15,000 रुपये कम हो गए। वजह क्या है? सबसे बड़ी वजह अमेरिकी डॉलर का मजबूत होना है। जब जंग होती है तो लोग डॉलर को भी सुरक्षित मानते हैं और डॉलर मजबूत होने से सोना महंगा लगता है क्योंकि सोना डॉलर में बेचा जाता है। दूसरे, तेल की कीमत 110 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चली गई जिससे दुनिया भर में महंगाई का डर बढ़ गया। अमेरिका की फेडरल रिजर्व बैंक अब ब्याज दरें कम करने की योजना टाल रही है क्योंकि महंगाई बढ़ रही है। सोना ब्याज नहीं देता इसलिए जब ब्याज वाली चीजें जैसे बॉन्ड ज्यादा आकर्षक हो जाती हैं तो लोग सोना बेच देते हैं। तीसरी वजह, स्टॉक बाजार गिरने से निवेशकों को पैसे की जरूरत पड़ी और उन्होंने सोना बेचकर पैसा निकाला। इससे सोने की मांग कम हो गई। विशेषज्ञ जैसे एनरिक मनी के सीईओ पोनमुडी आर कहते हैं कि यह छोटी अवधि की गिरावट है और निवेशक मार्जिन कॉल या पैसे की जरूरत पूरी करने के लिए सोना बेच रहे हैं। पिछले साल भी सोना बहुत चढ़ चुका था इसलिए मुनाफा वसूली भी हुई। भारत में रुपये की कीमत ९२ से ऊपर पहुंच गई जिससे सोना और प्रभावित हुआ। कुल मिलाकर यह दिखाता है कि पुराने नियम अभी भी लागू हैं लेकिन इस बार डॉलर, तेल और ब्याज दरों ने सोने को पीछे धकेल दिया। यह असामान्य है लेकिन बाजार हमेशा एक जैसा नहीं चलता।

आज सोने की क्या कीमत है और बाजार का हाल?

21 मार्च 2026 को भारत में सोने की कीमत लगभग 1,40,000 से 1,45,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के आसपास है। एमसीएक्स पर अप्रैल वायदा 1,45,570 रुपये तक गिर चुका है। 24 कैरेट सोना प्रति ग्राम 14,500 रुपये के करीब है जबकि 22 कैरेट 13,300 रुपये प्रति ग्राम है। पिछले कुछ दिनों में कीमतें थोड़ी स्थिर हुई हैं लेकिन कुल गिरावट काफी है। चांदी भी 30,000 रुपये प्रति किलो गिर गई है। बाजार में अभी थोड़ा डर है क्योंकि जंग जारी है और तेल महंगा है लेकिन सोने की मांग कम हो गई है। दिल्ली, मुंबई और चेन्नई जैसे शहरों में भी कीमतें इसी तरह नीचे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि अभी बाजार तटस्थ है लेकिन अगर जंग और बढ़ी तो फिर से उछाल आ सकता है। हालांकि डॉलर और महंगाई अभी सोने को दबा रहे हैं। भारत में लोग अभी खरीदने में हिचकिचा रहे हैं क्योंकि उन्हें लग रहा है कि और गिरावट आ सकती है। लेकिन लंबे समय के निवेशक सोच रहे हैं कि यह अच्छा मौका हो सकता है क्योंकि सोना अभी भी पिछले साल से ऊंचा है। कुल मिलाकर बाजार में उतार-चढ़ाव है और निवेशक फेड की बैठक और तेल की कीमतों पर नजर रखे हुए हैं।

आगे सोना 1 लाख के नीचे जाएगा या नहीं?

भविष्य में सोना 1 लाख के नीचे जाएगा या नहीं यह सवाल सबके मन में है। विशेषज्ञों का कहना है कि शॉर्ट टर्म में और गिरावट संभव है लेकिन 1 लाख तक पहुंचना मुश्किल लगता है। सपोर्ट लेवल 1,35,000 से 1,40,000 रुपये प्रति 10 ग्राम है और अगर यह टूटा तो थोड़ी और कमी हो सकती है लेकिन इतनी बड़ी गिरावट की संभावना कम है क्योंकि दुनिया भर के सेंट्रल बैंक सोना खरीद रहे हैं और लंबे समय में सोना मजबूत रहता है। अगर जंग खत्म हुई या तेल की कीमत कम हुई तो सोना रिकवर कर सकता है और 1,50,000 तक जा सकता है। लेकिन अगर महंगाई ज्यादा रही और फेड ब्याज दरें ऊंची रखी तो गिरावट जारी रह सकती है। टाटा म्यूचुअल फंड जैसे विशेषज्ञ कहते हैं कि यह गिरावट खरीदने का मौका है क्योंकि लंबे समय में जियोपॉलिटिकल तनाव और सेंट्रल बैंक खरीदारी सोने को सपोर्ट करेगी।

जब वैश्विक तनाव बढ़ता है, तो निवेशक सुरक्षित विकल्पों की ओर जाते हैं, लेकिन ब्याज दरें ऊंची रहने पर सोने की आकर्षण क्षमता सीमित हो जाती है। इसलिए हर संकट में सोना एक जैसा व्यवहार नहीं करता।

जेरोम पॉवेल (अमेरिकी केंद्रीय बैंकर)

आज के समय में केवल युद्ध ही नहीं, बल्कि महंगाई और केंद्रीय बैंकों की नीतियां भी सोने की दिशा तय करती हैं। इसलिए बाजार पहले से ज्यादा जटिल हो गया है।

नूरील रूबिनी (अमेरिकी आर्थिक सलाहकार)

अनिश्चितता के समय सोना अभी भी एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है, लेकिन निवेशकों को यह समझना होगा कि यह अल्पकाल में उतार-चढ़ाव से मुक्त नहीं है।

रेमंड थॉमस डेलियो (अमेरिकी अरबपति)

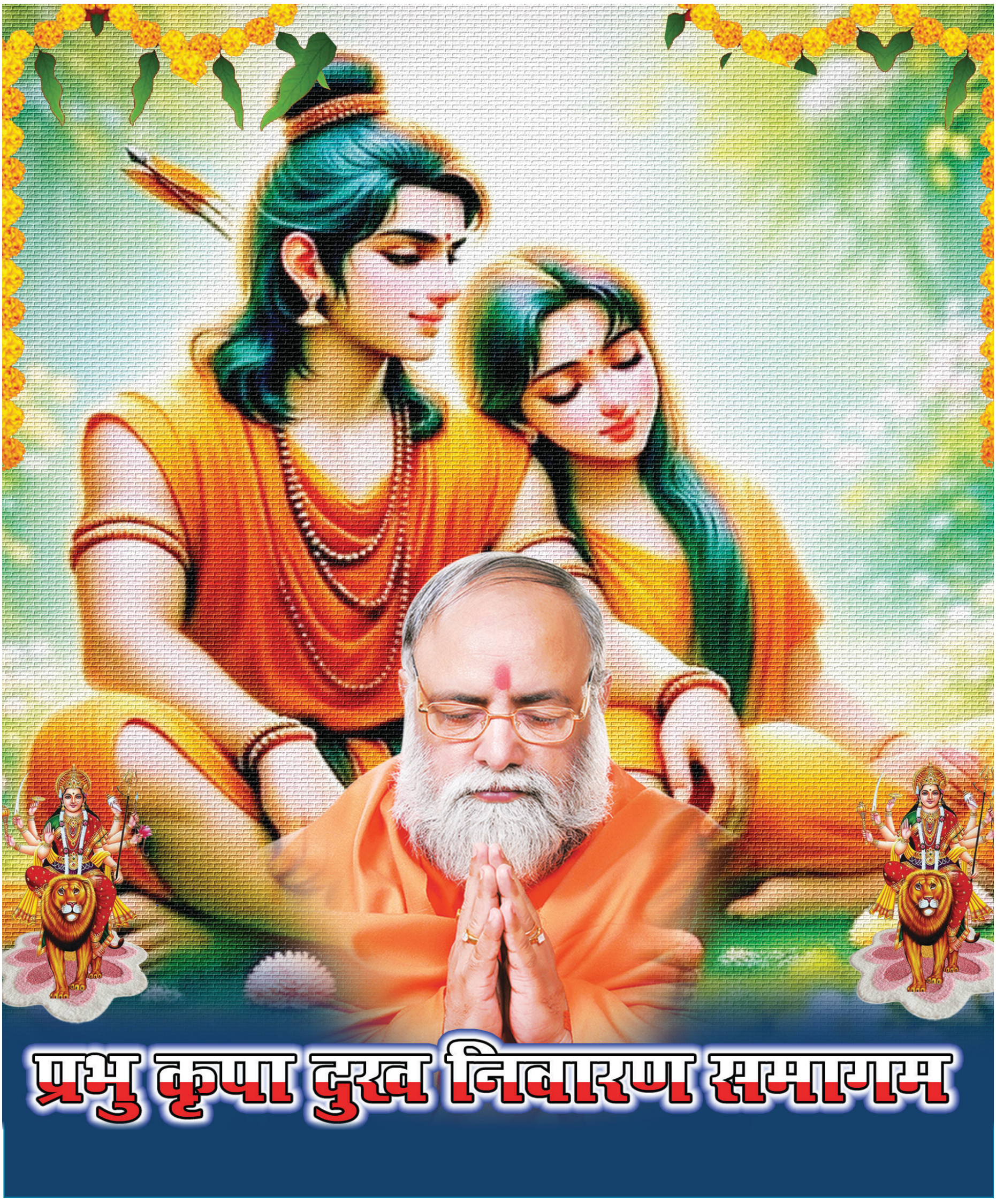
प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries